पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

दिसंबर 2020

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

Punjab & Sind Bank

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)

पी.एस.बी

राजभाषा विभाग

राजभाषा संगोष्ठी

दिनांक 29.10.2020 को डॉ. सुमित जैरथ (आई.ए.एस.)- सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं श्री संदीप आर्य-निदेशक (तकनीकी/कार्यान्वयन/प्रशासन) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की उपस्थिति में हमारे बैंक में विशेष राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आयोजन उपरांत मुख्य अतिथियों के साथ बैंक के श्री एस. कृष्णन- प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अमित श्रीवास्तव-उप महाप्रबंधक, श्री निखिल शर्मा-वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री देवेन्द्र कुमार-वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), डॉ. नीरू पाठक-प्रबंधक, श्री मोहन लाल- राजभाषा अधिकारी।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका
राजभाषा अंकुर
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)
बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

दिसंबर 2020

मुख्य संरक्षक
श्री एस. कृष्णन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
संरक्षक
श्री अजित कुमार दास
कार्यकारी निदेशक
मुख्य संपादक
श्री अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
सह मुख्य राजभाषा अधिकारी
संपादक एवं प्रकाशक
श्री निखिल शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
संपादक मंडल
श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी
ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in
पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रैस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 31/01/2021)
'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एंव कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 98112 69844
ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	आपकी कलम से	3
4.	राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका	4-6
5.	मेरी पूजा	7-8
6.	सतर्कता विभाग की प्रासंगिकता	9-11
7.	बैंक और ग्राहक सेवा	12-13
8.	जगन्नाथ की रथयात्रा (उड़िया लेख हिंदी रूपांतर सहित)	14-18
9.	ज़रा सोचिए....?	18
10	नराकास उपलब्धियाँ	19
11.	हिंदी कार्यशाला	20
12.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ	21
13.	प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित राजभाषा संगोष्ठी	22-23
14.	काव्य-मंजूषा	24-25
15.	संत कबीर की बह्म-भावना	26-28
16.	बाधाओं से लड़ने की शक्ति देता है 'संघर्ष'	28
17.	प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना	29-30
18.	हमें इन पर गर्व है	30
19.	व्यवसायिक जीवन में एथिक्स की आवश्यकता	31-33
20.	कार्टून कोना	33
21.	गुरूनानक देव जी के 551वें प्रकाश पर्व की झलकियाँ	34-35
22.	ग्राहक के मुख से	36
23.	खुदरा बैंकिंग में हिंदी का योगदान	37-39
24.	छोटी-छोटी बातों की है अहमियत बड़ी	39
25.	अवसंरचना के निर्माण में वित्तीय संस्थानों एवं बैंकों की भूमिका	40-41
26.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020	42-44

संपादकीय

प्रिय पाठको,

जब यह अंक आपको प्राप्त होगा, तब शिशिर ऋतु की सुनहरी धूप के साथ नव वर्ष 2021 आपका स्वागत कर चुका होगा। सर्वप्रथम आप सभी को मेरी तथा राजभाषा विभाग की ओर से नव वर्ष की बहुत–बहुत बधाई तथा शुभकामनाएं। नए वर्ष के साथ राजभाषा अंकुर पत्रिका भी अपने हर अंक के साथ लगातार ऊंचाईयों को छू रही है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दिल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से हमारी ई–पत्रिका "राजदीप" को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके लिए न केवल राजभाषा विभाग बल्कि आप सभी बधाई के पात्र हैं। निश्चित रूप से बैंक के सभी भाषा–भाषी स्टाफ सदस्यों की पत्रिका में सहभागिता के कारण ही यह संभव हो पाया है। बैंक के ग्राहक भी पत्रिका से जुड़ रहे हैं, जिससे पत्रिका का कलेवर और भी विस्तृत होता जा रहा है। पत्रिका के गौरव तथा निरंतरता को बनाए रखने के लिए आपकी सहभागिता तथा सुझाव ही इसकी सफलता का मूलभूत आधार है।

पत्रिका के प्रस्तुत अंक में राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेखो के साथ इस अवधि में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ जैसे डॉ. सुमित जैरथ (आई.ए.एस.), सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं श्री संदीप आर्य, निदेशक (तकनीकी/कार्यान्वयन/प्रशासन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की उपस्थिति में विशेष राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। इसके बाद श्री अम्बरीश कुमार मिश्रा – मुख्य सतर्कता अधिकारी की उपस्थिति में 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इन दोनों कार्यक्रमों में हमारे श्री एस. कृष्णन – प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कार्यकारी निदेशक तथा अन्य समस्त उच्चाधिकारीगण भी उपस्थित थे। आगे गुरुनानक देव जी के 551वें गुरु पर्व से संबंधित छायाचित्र तथा अन्य गतिविधियाँ अत्यंत रूचिकर तथा ज्ञानवर्धक हैं। भाषिक एकता सूत्र संयोजन की कड़ी में इस बार श्री मिलन कुमार द्वारा रचित उड़िया लेख (हिंदी रूपांतर सहित) पत्रिका का विशेष आकर्षण है।

आशा है "राजभाषा अंकुर" का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं।

अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

आपकी कलम से

आपकी हिंदी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" का अंक प्राप्त हुआ है। एतदर्थ आपको धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित बैंकिंग तथा हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं से संबंधित लेख, कहानी, कविताएँ, कोरोना महामारी से संबंधित लेख बेहद ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। कोरोना महामारी के दौरान आपके बैंक द्वारा निभाएं गए कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व प्रेरणादायक हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषा 'पंजाबी' को भी शामिल किया गया है, जिससे पत्रिका का मूल्यवर्धन हुआ है।

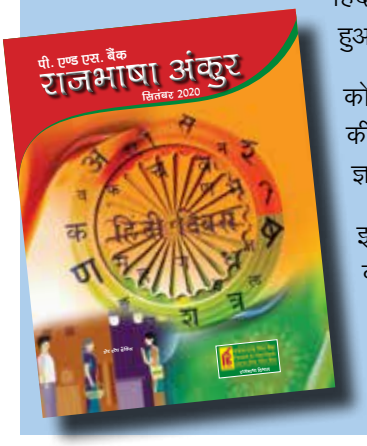

कोरोना एवं अर्थव्यवस्था, कोरोना संकट में बदलता बचपन, पर्यावरण और कोविड–19, वर्तमान सदी की चुनौतियाँ और हिंदी साहित्य, हिंदी ई–टूल्स व इनके अनुप्रयोग आदि जैसे बेहद ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक आलेखों ने इस पत्रिका की खूबसूरती में चार–चाँद लगा दिए हैं।

इस उम्दा पत्रिका के लिए संपादक मण्डल की पूरी टीम को बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ। आशा है कि आपके द्वारा ऐसी ही सुंदर पत्रिका का प्रकाशन अनवरत होता रहेगा।

अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक
यूको बैंक

हमें आपके बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के नवीनतम अंक की प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका की साज–सज्जा एवं कलेवर अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के इस अंक में 'बैंकों में अनुपालन संस्कृति', 'वर्तमान सदी की चुनौतियाँ और हिंदी साहित्य' 'कोरोना एवं अर्थव्यवस्था' आदि आलेख तथा काव्य मंजूषा काफी ज्ञानवर्धक एवं उत्साहवर्धक हैं।

राजभाषा हिंदी संबंधी सामग्री हिंदी के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता प्रदान करती है।

कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

शैलेश कुमार मालवीय
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ इंडिया

पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा अंकुर पत्रिका का सितंबर 2020 अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम बैंक को वर्ष 2019–20 में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त करने के लिए बहुत–बहुत बधाई। लेख, कहानी, कविता, कार्टून, संस्मरण तथा हिंदी दिवस से संबंधित चित्रों से परिपूर्ण पत्रिका जैसे गागर में सागर का भान कराती है। लेख– हार और जीत, राष्ट्र निर्माण में भाषा की भूमिका तथा बैंकों के निजीकरण का अर्थव्यवस्था पर असर, कहानी – रावण जिंदा है, उर्दू रचना– एकाग्रता की शक्ति, कविता – उम्मीद की किरण के लिए सभी लेखकों को साधूवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेखन सामग्री के चयन तथा साज–सज्जा के लिए संपादक मंडल विशेष सराहना का पात्र है। आपके सार्थक प्रयासों की सराहना के साथ पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

बंकट लाल सोनी
सहायक महाप्रबंधक
अंचल दिल्ली–2

डॉ. सुमित जैरथ

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

राजभाषा अर्थात राज–काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम–जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीज़े थी जिसमें मत–मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो? इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने–कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आंकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुतम से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां इसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।', इसको ध्यान में रखते हुए राजभाषा–हिंदी को सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रतिदिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए? इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति–विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है।

आस्था वो पक्षी है जो भोर के अंधेरे में भी उजाले को महसूस करती है। – रवींद्रनाथ ठाकुर

प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Incouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊँचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम और स्नेह (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना, कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा, कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालय/विभागों/बैंकों/उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने–कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्ट आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का बहुत योगदान होता हैं।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग–अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं– ''आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।'' कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौतियां खड़ी कर दी है। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई–प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत–स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे–धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है, इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय–समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व–माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृहमंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के साथ संपर्क

करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीकी के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करने सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार–प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करें। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह–पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाले ई–पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ–साथ बॉलीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय–समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच–बिंदु और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती है कि

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित निर्देशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

सचिव
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

कामेश सेठी

मेरी पूजा

मेरी पूजा कोई भगवान की अराधना वाली नहीं है बल्कि यह एक छोटी सी बच्ची की कहानी है जिसका नाम पूजा है, मेरे जीवन में आई और फिर.....

आज से लगभग डेढ़ दो बरस पहले कलकत्ता की एक पॉश टाउनशिप जहाँ अधिकतर सम्भ्रांत परिवार रहते थे। एक दिन मैं अपनी बेटी और पत्नी के साथ बैडमिंटन खेल रहा था। सर्दियों के दिन थे लेकिन धूप खिली थी। मौसम बहुत ही मनोरम था। बैडमिंटन कोर्ट पर अचानक एक छोटी सी बच्ची जिसकी उम्र लगभग सात वर्ष थी और कहने लगी मैं भी बैडमिंटन खेलती हूँ, मैंने कहा – तुम आंटी के साथ खेलो। तुरंत कहने लगी, आंटी को इतना अच्छा नहीं आता। मैंनें दूर से देख लिया था। मैं तो आपके साथ ही खेलूँगी। मुझे उसका आत्म–विश्वास देखकर बहुत अच्छा लगा और उससे भी अच्छा लगा, उसकी भाव–भंगिमा जैसे पता नहीं कब से मुझे जानती है। मैं तो उसकी बाल–सुलभ बेबाकता देखकर चकित भी था और अभिभूत भी।

सांवला रंग पर चेहरे पर चमक, बड़ी–बड़ी आँखे, तितर–बितर बाल, बाल सुलभ चंचलता के साथ बार–बार अपनी कैपरी को ऊपर करना और एक हाथ में रैकेट पकड कर बैडमिंटन खेलना। यह कहना गलत नहीं होगा कि छोटी सी उम्र में जैसे बहुत कुछ करने की चाह थी उसमें। उसकी नजर चारों तरफ रहती थी और सभी बच्चे उसे बहुत अच्छी तरह से जानते थे। इस वजह से सभी से वह बात करती रहती थी फिर अचानक एक बच्चे की साइकिल मांग कर, अभी आती हूं, कह कर साइकिल चलाने का आनंद लेने लगी और मैदान का चक्कर लगाने लगी उसके हाव–भाव से यह लगने लगता था कि वह सारी दुनिया को कुछ दिनों में ही हासिल करना चाहती है। जब साइकिल चलाती तो उसके चेहरे पर बड़ा गर्व नजर आता। उसका साइकिल चलाने का अंदाज किसी ऑडी के मालिक से कम नहीं था। अचानक आकर मेरे सामने आ गई और कैपरी को ऊपर खींचते हुए कहने लगी अंकल आप अपनी कार किस से धुलवाते हो, "मैंने कहा मेरा ड्राइवर ही कार धोता है।" अरे अंकल मेरे पापा न कार बहुत अच्छी धोते हैं। मुझे तब पता चला कि वह किसी काम करने वाले नौकर की बेटी है और उसकी मां घरों में झाड़ू–पोंछा करती है, उसके पिता ड्राइवर हैं लेकिन उस बच्ची का आत्मविश्वास और कुशाग्रता वहां रहने वाले किसी भी एक्सीक्यूटिव के बच्चे से कहीं ज्यादा थी।

गजब की वाकपटुता, व्यवहार–कुशलता, तीव्रता, फुर्तीलापन जो कि एक सामान्य बच्चे में कम ही पाया जाता है। उसकी सब कुछ जान लेने की जिज्ञासा । मेरी बेटी के पास बैठकर पूछने लगी "आपकी शादी नहीं हुई"। मेरी बेटी ने कहा "नहीं"। मेरी बेटी ने पूछा "कौन सी क्लास में पढ़ती हो"। उसने तुरंत जवाब दिया दीदी मुझे पढ़ना जरा भी अच्छा नहीं लगता है। मुझे तो खेलना अच्छा लगता है और पूछने लगी कि क्या आपको पढ़ना अच्छा लगता है?

मैं ही नहीं मेरा पूरा परिवार उसकी बातों से मंत्र–मुग्ध हो जाता था और धीरे–धीरे वह बच्ची मेरे सभी निकटतम साथियों और रिश्तेदारों के बीच चर्चा का विषय बन गई। एक अजीब सा आकर्षण उसके व्यक्तित्व में था। सभी खेलते हुए बच्चों के बीच में वह अलग नजर आती। एक दिन मैंने उससे पूछा "सन चई"। तुरंत कहने लगी, अरे आप नेपाली जानते हो? मैंने कहा थोड़ा–थोड़ा सीख रहा हूं। दरअसल वह लड़की नेपाली थी उसने कहा अंकल, मैं नेपाली बोल नहीं पाती पर समझ लेती हूं। मेरे पास समय केवल रविवार को ही होता था और अब तो मुझे जैसे रविवार का इंतजार ही रहता था। मैं सिर्फ उस बच्ची से बातें करने के लिए हर रविवार को बैडमिंटन खेलने जाता और जानबूझकर 2 रैकेट ले जाता ताकि वह बच्ची आए और खेले। धीरे–धीरे पूजा मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गई। दिन या रात जब भी उस मैदान से गुजरता मुझे उस बच्ची का उछल–कूद करना, आत्मविश्वास से भरी बातें करना, एक मौज–मस्ती का जीवन बिताना और किसी भी काम को तुच्छ या उच्च न समझना। वामपंथियों की याद ताजा कर देती थी।

मैं और मेरी बेटी पूरे दिन काम से थककर उस पूजा को याद कर अक्सर कहते थे, सचमुच जीवन तो पूजा जी रही है, बिना किसी लक्ष्य के, अच्छे–बुरे की परवाह के बगैर बिना किसी हीन भावना के सिर्फ वर्तमान में जीना, एक अनूठी स्वछंद जीवन शैली सिखाता है। बेटी कहती पापा हमें उस बच्ची से सीखना चाहिए। सच बताऊँ उसकी उस जीवनशैली और सरलता देख कर लगता, मैं कहीं दार्शनिक न बन जाऊं।

फिर अप्रैल 2020 आया कोरोना से परेशान लोग घरों में दुबक गए, मैं भी एक रविवार की सुबह मास्क लगाकर हाथों में रैकेट लिए खुले बैडमिंटन कोर्ट में पूजा की प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ ही बच्चे खेल रहे थे, पर सभी ने मास्क लगाया हुआ था। अचानक पूजा बिना मास्क के आई और कहने लगी, "खेलेंगे"। मैंने कहा, हां–हां। आज जींस पहनी हुई थी और हमेशा की तरह पीछे से जींस को ऊपर की ओर खींच कर बोली, "आपको भी कोरोना से डर लगता है"। मैंने कहा मैं बूढ़ा हो गया हूं ना और कोरोना बूढ़े व्यक्ति को जल्दी पकड़ता है। लेकिन तुमने मास्क नहीं लगाया? वह बोली, नहीं, मैं तो बिल्कुल भी नहीं डरती अंकल। इतना बोल कर अचानक कुछ बच्चों से स्केटस मांग कर स्केटिंग करने लग गई और मैं उसकी राह देखता रहा। वह सभी तरह की खेलों में कुशल थी। उसके हाथ में घर की चाबी से पता चलता था कि उसके मां–बाप काम पर चले जाते और वह चाबी लेकर दुनियादारी से दूर बच्चों के साथ खेलने में मग्न हो जाती थी।

एक रविवार सुबह का समय था, मैं बैडमिंटन का रैकेट हाथ में लिए मुंह पर मास्क लगाकर बैडमिंटन कोर्ट में जाकर बैठ गया और पूजा की राह देखता रहा। अब तक कुछ बच्चे आ चुके थे और मैदान में थोड़ी भीड़–भाड़ भी हो गई थी। कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे, कुछ स्केटिंग कर रहे थे और कुछ बैडमिंटन खेल रहे थे। जब कुछ देर तक पूजा नहीं आयी तो मैंने ढूंढने की सोची और इतने में ही एक मैना मेरे पास आकर बैठी, मन में एक आवाज सी आयी "वन फोर सोरो", कुछ लोगों का मानना है एक मैना दुःख और दो मैना सुख का सूचक होती है। मैंने उसे जल्दी से उड़ा दिया। जब काफी देर हो गई और पूजा नहीं आई तो मैं उदास होकर घर जाने को हुआ, अचानक एक बच्चा मेरे पास आया और कहा आप पूजा को ढूंढ रहे हैं, शायद मुझे उसके साथ हमेशा खेलते देखता रहा होगा। मैंने कहा, हाँ कहाँ है वो और उसके बाद जो उसने कहा वह मेरे लिए सोचना भी असंभव था, मेरे पैरों तले जमीन निकल चुकी थी, जैसे किसी ने सारे शरीर से खून निचोड़ लिया हो। अंकल पिछले शुक्रवार को कोरोना से उसकी.....। मैं जैसे कुछ सुन ही नहीं पा रहा था। प्रकृति का इतना बड़ा अन्याय मेरे दिल और दिमाग को झकझोर कर रख दिया। बहुत देर तक मैं वहीं बैठा रहा। अंधेरा हो गया था, मैं भारी मन से अपने को जैसे–तैसे संभाल कर घर की ओर चल दिया।

अगले दिन मैं बैंक नहीं जा पाया, मैं उसके घर गया पता करने के लिए कि सब कुछ कैसे हो गया। लेकिन सर्वेंट क्वार्टर पर ताला लगा हुआ था। पड़ोसियों ने बताया कि वह अपने मां–बाप की इकलौती बच्ची थी, बहुत प्यार करते थे उसे, उसके जाने के बाद दोनों हमेशा के लिए अपने गाँव चले गए। मेरी जिंदगी भर की पूजा उस छोटी सी पूजा को बचा न सकी। मैं आज तक उस कोरोना को कोसता रहता हूं जिसने मेरी पूजा को मुझसे हमेशा के लिए दूर कर दिया।

अब मैंने बैडमिंटन खेलना बंद कर दिया और रविवार को मैदान जाना बंद कर दिया। जून के महीने में मेरा तबादला दिल्ली हो गया। रविवार को मैं आखिरी बार उस बैडमिंटन कोर्ट पर गया मेरी आंखें उस नन्ही सी पूजा को ढूंढ रही थी। मैं बैडमिंटन रैकेट आज अपने साथ नहीं लाया था। घास पर बैठा बच्चों को खेलते देख रहा था, कुछ स्केटिंग, कुछ बैडमिंटन और कुछ क्रिकेट का आनंद ले रहे थे। मुझे सभी बच्चों में पूजा दिख रही थी। उसकी चंचलता भरी आँखें, पीछे से बार–बार कैपरी ऊपर खींचना, साइकिल चलाना, अंकल मैं अभी आती हूं, जाना नहीं, कहना, इन्हीं सब में डूबा था कि अचानक पीछे से मेरी आंखों के सामने एक रैकेट आया और आवाज आई अंकल बैडमिंटन खेलोगे, मैं देख कर हैरान हो गया लगभग उसी उम्र की उसी की तरह चंचल बच्ची मेरी ओर देख रही थी। मैने रैकेट पकड़ना चाहा लेकिन नहीं पकड़ पाया वास्तव में वह मेरा भ्रम था। मैं अपनी बेवकूफी पर मुस्कुराता हुआ घर चला गया।

दिल्ली की व्यस्तता भरी जिंदगी ने पूरी कोशिश कि मैं उस नन्ही पूजा को भूल जाऊं परंतु आज भी उसकी तस्वीर मेरी आंखो के सामने घूमती रहती है। अभी भी उसकी मधुर आवाज कानों में गूंजती है, बैडमिंटन खेलोगे अंकल, जाना नहीं, मैं अभी आती हूं। मेरे पापा कार बहुत अच्छी धोते है.....

मैं शायद भगवान की पूजा करना एक बार भूल जाऊँ मगर उस नन्ही पूजा को कभी नहीं भूल पाता। यू आर ग्रेट पूजा..... यू आर ग्रेट।

महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय, मा.सं.वि.विभाग

दिनेश कुमार गोयल

सतर्कता विभाग की प्रासंगिकता

नैतिकता समाज का वह तत्व है जिसके प्रभाव से समाज में जागरूकता, संयम और अनुशासन आता है। समाज के लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इन आवश्यक तत्वों को आत्मसात करें परंतु कई बार ऐसा देखा जाने लगा कि मनुष्यों ने अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिए नैतिकता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, न्याय आदि की तिलांजली दे दी। सतर्कता की शुरुआत यहीं से होती है। शुद्ध आचरण, नैतिक आचरण को अपनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति से अनुनय–विनय नहीं की जानी चाहिए। कुछ लोगों के लिए इनका कोई मोल नहीं होता। ऐसे लोगों के लिए भय जरूरी है। सतर्कता ऐसे लोगों के मन में भय पैदा करता है।

हमारे प्राचीन काल के इतिहास में राजा–महाराजा अपने शासन – व्यवस्था में पारदर्शिता, नीति और अनुशासन का ध्यान रखते थे। वो स्वयं भी इसका ख्याल रखते थे तथा प्रजा से भी अपेक्षा रखते थे कि वो भी अनुशासित और ईमानदार रहें। हमने देखा है कि पहले के राजाओं के द्वारा गुप्तचर भी रखे जाते थे, जो राजा को राज्य का हाल बताते थे। वो गुप्त विधि से राज्य के अधिकारियों के कामकाज का तरीका, जनता में उनकी छवि आदि की सूचना एकत्रित करते थे और फिर इसे राजा को देते थे। इन गुप्त सूचनाओं के आधार पर राजा अपने अधिकारियों की कार्य शैली की समीक्षा करता था। अतः इतिहास में भी सतर्कता को वरीयता दी जाती थी।

हमें ज्ञात है कि भ्रष्टाचार देश की गरिमा, संपन्नता व विकास को एक दीमक की भांति धीरे–धीरे खाता जाता है। भौतिक संसाधनों की लोलुपता ने हमें धन का गुलाम बना डाला है। येन–केन–प्रकरेण हम सिर्फ धन प्राप्ति की ही लालसा रखने लगे है। यहां गौरतलब है कि मेहनत और ईमानदारी से कमाया गया धन स्वागत योग्य होता है क्योंकि ये सभी नियमों को पूरा कर कमाया जाता है परंतु जब हम नियमों को ताक पर रख कर अनैतिक तरीके से धन कमाते हैं तब यह भ्रष्टाचार कहलाता है। भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार से जुड़े लोग अपने स्वार्थ में

अंधे होकर नैतिकता से विहीन होकर राष्ट्र का नाम बदनाम करते हैं। एक पद विशेष पर बैठे हुए व्यक्ति का अपने पद का दुरुपयोग करना ही भ्रष्टाचार कहलाता है। ऐसे लोग अपने पद का फायदा उठाकर अनैतिक तरीके से धन कमाना यथा– कालाबाजारी, गबन, रिश्वतखोरी इत्यादि कार्यों में लिप्त रहते है जिसके कारण हमारे देश का प्रत्येक क्षेत्र भ्रष्टाचार से प्रभावित होता है। इसके कारण हमारे देश की आर्थिक प्रगति को भी नुकसान पहुँचता है। हमारा नैतिक स्तर इतना गिर गया है कि हम अन्य लोगों के बारे में जरा भी नहीं सोचते है। चिंता की बात यह है कि हममें ऐसी प्रवृत्तियां बढ़ती ही जा रही है। जब तक इस तरह की प्रवृत्ति को अपराध की श्रेणी में रखकर कड़ा दंड नहीं दिया जाएगा तब तक यह बीमारी समाज और देश को भीतर ही भीतर खा जाएगी। लोगों को स्वयं में ईमानदारी विकसित करनी होगी। अपने साथ–साथ और लोगों को भी ईमानदार रहने की सीख देनी होगी और जो ऐसा न करें उसे कड़े दंड देने का प्रावधान होना चाहिए। ऐसी ही अवांछनीय प्रवृत्तियों को शामिल करने के किए सतर्कता विभाग का गठन किया जाता है। कार्यस्थल पर नैतिक आचरण बनाए रखना बेहद महत्वपूर्ण है।

समाज द्वारा परिभाषित बुनियादी नैतिकता और मूल्यों के अलावा हर संगठन अपने नैतिक मूल्यों की सीमाओं को निर्धारित करता है। उस संगठन में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आचार संहिता बनाए रखने के लिए उनका पालन करना चाहिए।

सतर्कता के मुख्य कार्यो में भ्रष्ट आचरण करने वालों को पर्याप्त जांच के उपरांत उनके अपराध की सजा दिलवाना व तमाम ऐसे उपाए करना जिससे ऐसे आचरण की पुनरावृत्ति न हो सके, इत्यादि आता है। सतर्कता के दृष्टिकोण को ध्यान से देखें तो पाएंगे कि यह केवल दंडात्मक नहीं है। यह एक ऐसी प्रणाली भी विकसित करने का प्रयास करता है जिससे विभागीय कार्यों में पारदर्शिता आए। सतर्कता की आवश्यकता को समझते हुए इसे संस्थागत रूप भी दिया गया है। भारत का केन्द्रीय सतर्कता आयोग (Central Vigilance Commission) भारत सरकार के विभिन्न विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों से संबंधित भ्रष्टाचार नियंत्रण की सर्वोच्च संस्था है। इसकी स्थापना सन् 1964 में की गयी थी। इस आयोग के गठन की सिफारिश संथानम समिति (1962–64) द्वारा की गयी थी, जिसे भ्रष्टाचार रोकने से संबंधित सुझाव देने के लिए गठित किया गया था। केन्द्रीय सतर्कता आयोग सांविधिक दर्जा (statutory status) प्राप्त एक बहु–सदस्यीय संस्था है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग किसी भी कार्यकारी प्राधिकारी के नियंत्रण से मुक्त है तथा केन्द्रीय सरकार के अंतर्गत सभी सतर्कता गतिविधियों की निगरानी करता है। यह केन्द्रीय सरकारी संगठनो में विभिन्न प्राधिकारियों को उनके सतर्कता कार्यों की योजना बनाने, निष्पादन करने, समीक्षा करने तथा सुधार करने में सलाह देता है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग विधेयक संसद के दोनो सदनों द्वारा वर्ष 2003 में पारित किया गया, जिसे राष्ट्रपति ने 11 सितम्बर 2003 को स्वीकृति दी। इसमें एक केंद्रीय सतर्कता आयुक्त जो कि अध्यक्ष होता है तथा दो अन्य सतर्कता आयुक्त (सदस्य जो दो से अधिक नहीं हो सकते) होते हैं।

भारत सरकार के सभी कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों में सतर्कता विभाग होता है। सतर्कता की संकल्पना के तीन आधार हैं जिसके बल पर यह भ्रष्टाचार को रोकता है–I) निरोधक सतर्कता, II) निगरानी सतर्कता, III) दंडात्मक सतर्कता। अब हम इन पर विचार करते हैं–

I) निरोधक सतर्कता (Preventive Vigilance)– यह बिल्कुल सही है कि रोकथाम, इलाज से बेहतर है (Prevention is better than cure) इसके लिए भारत सरकार के सभी कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों में सतर्कता विभाग होता है। यह विभाग केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशा–निर्देशों द्वारा संचालित होता है। हमारा बैंक भी केन्द्रीय सतर्कता आयोग के सभी दिशा–निर्देशों का अनुपालन करता है। सतर्कता विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी मुख्य सतर्कता अधिकारी होता है। ऐसा प्रचलन है कि संस्थान में किसी बाहरी संगठन के व्यक्ति को ही मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है कि सतर्कता से संबंधित दिशा–निर्देशों के अनुपालन में किसी भी प्रकार का पक्षपात न हो। वह पूरी पारदर्शिता के साथ कार्य करें। किसी मामले में सतर्कता दृष्टिकोण की जांच करते समय व्यक्तिगत तौर पर किसी से प्रभावित न हो तथा कोई भी निष्कर्ष सिर्फ और सिर्फ तथ्यों के आधार पर ही निकाले। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर संस्थान के भीतर के अधिकारी को उस संस्थान का मुख्य सतर्कता अधिकारी नहीं बनाया जाता है। सतर्कता विभाग में सर्वोच्च अधिकारी मुख्य सतर्कता अधिकारी होता है। इसके बाद विभाग में उप महाप्रबंधक रैंक का अधिकारी होता है तथा इसके बाद सहायक महाप्रबंधक और उसके बाद अन्य स्टाफ सदस्य होते हैं। हमारे बैंक के सभी आंचलिक कार्यालयों में सतर्कता अधिकारी होते हैं। ये अंचल के अंतर्गत आने वाली शाखाओं के मामले को सतर्कता दृष्टिकोण से जांच करते हैं और रिपोर्ट को संबंधित आंचलिक प्रबंधक, प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग को भेजते हैं। इन रिपोर्टों के आधार पर उन तमाम पहलुओं को जांचा – परखा जाता है जहां वित्तीय अनियमितता की संभावना हो सकती है। इस संबंध में विभाग समय–समय पर दिशा–निर्देश निकालता रहता है और पूरे बैंक में इससे संबंधित जागरूकता फैल सके, इसके लिए प्रयास भी करता है। अतः सतर्कता का एक प्रमुख आधार निरोधक होता है।

II) निगरानी (Surveillance Vigilance)– निगरानी, सतर्कता का एक प्रमुख अंग है। इसमें स्टाफ के संदेहजनक व्यवहार व असामान्य लेन–देन आदि की सर्वप्रथम निगरानी की जाती है। निगरानी विभाग समय–समय पर सभी स्टाफ सदस्यों के संबंध में बाजार की खबर भी लेता रहता है। बाजार की खबर से तात्पर्य है कि किसी स्टाफ के द्वारा किस प्रकार का जीवन यापन किया जा रहा है। वो स्टाफ अगर अचानक से अपने जीवन यापन में असामान्य बदलाव करता है, अपने खर्चे में अचानक वृद्धि करता है तो विभाग सतर्क हो उसकी निगरानी करता है। उसकी कुल आमदनी और उसके कुल खर्चे की जांच की जाती है। इस तरह स्टाफ सदस्य संस्थान से बाहर भी किस तरह से रह रहा है इसकी पूरी खबर सतर्कता विभाग रखता है। इसे ही बाजार की खबर कहते हैं। विभाग

समय–समय पर संस्थान के कर्मचारियों के खातों की जांच भी करता है। किसी खाते में अगर असामान्य या संदेहास्पद लेन–देन का पता चलता है तो उस खाते की निगरानी व सतर्कता दृष्टिकोण से जांच भी करता है। सतर्कता विभाग कार्यकारी अधिकारी के आस्ति देयता (Asset liability) की भी निगरानी करता है। विभाग यादृच्छिक (Random) तरीके से 20% स्टाफ की आस्ति देयता की जांच करता है। सतर्कता विभाग के इन कार्यों से स्टाफ सदस्यों को यह संदेश दिया जाता है कि उनके सभी प्रकार के लेन– देन, खर्चे आदि पर संस्थान की नजर रहती है।

II) दंडात्मक सतर्कता (Punitive Vigilance)– अब तक हमने सतर्कता विभाग के कार्यों से यह समझा है कि यह स्टाफ सदस्यों को किसी भी प्रकार की गलती करने से रोकना चाहता है। निरोधक उपायों और निगरानी के सांमजस्य से भ्रष्ट आचरण को यथा संभव रोकने का प्रयास किया जाता है परंतु फिर भी अगर किसी के द्वारा भ्रष्ट आचरण किया जाता है तो विभाग उसके खिलाफ तय दिशा–निर्देशानुसार कार्रवाई करता है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है कि "भय बिनु होई नही प्रीति" अर्थात बिना भय के प्रीति नहीं हो सकती। अपने कर्त्तव्यों से विचलन के गंभीर परिणाम हो सकते हैं, ये जानना बेहद जरूरी है। इस तरह की दंडात्मक कार्रवाई के लिए एक कार्य प्रणाली है। सर्वप्रथम उस स्टाफ को कारण बताओ नोटिस (show cause) जारी किया जाता है। अगर उसका जवाब सही और संतोषजनक है तो मामले का निपटान हो जाता है अन्यथा मामले को आगे आंतरिक सलाहकार कमेटी (Internal Advisory Committee) के पास भेज दिया जाता है। यह कमेटी मामले को अपने दृष्टिकोण के साथ मुख्य सतर्कता अधिकारी के निर्णय के लिए भेजती है। अगर मामला सतर्कता का नहीं मिलता तब सतर्कता विभाग हस्तक्षेप नहीं करता है और अगर मामला सतर्कता का है तब यह विभाग सक्रिय होता है। अधिकारी अगर स्केल I-III तक का है, तब अनुशासनात्मक प्राधिकारी आंचलिक प्रबंधक होता है और जब अधिकारी स्केल IV-V होता है, तब अनुशासनात्मक प्राधिकारी महाप्रबंधक, मानव संसाधन विकास विभाग होता है। सतर्कता विभाग यह भी देखता है कि अनुशासनात्मक प्राधिकारी के द्वारा दिया गया दंड उचित है या नहीं। अगर उपयुक्त नहीं पाया जाता है तब अनुशासनात्मक प्राधिकारी से जवाब भी मांगा जा सकता है।

हमें यह समझना चाहिए कि सतर्कता का काम लोगों को डराने का नहीं है बल्कि ऐसी भावनाओं को पल्लवित करना है कि हम सभी जनता के सेवक हैं और हमें अपनी सेवा सरकार के द्वारा जारी दिशा–निर्देशों, नियम–कायदे के अनुशासन में ही करनी है। दुनिया के सभी देश आज भ्रष्टाचार से जूझ रहे हैं और भारत भी इससे अछूता नहीं है। विश्व की जाना मानी संस्था के ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार हमारा देश विश्व में भ्रष्टाचार के मामलों में अभी 80 वें स्थान पर है। भारत जैसे सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक देश में भ्रष्टाचार का होना एक बहुत बड़ी विडंबना है। हमारा चरित्र ही राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करता है। अतः हमारे भ्रष्टाचारी होने से देश का चरित्र भी धूमिल होता नजर आ रहा है।

हमारा देश सत्य, अहिंसा, कर्मठता और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता था, लेकिन आज 21वीं सदी के भारत में यह सब चीजें देखने को नहीं मिलती है जिसके कारण हमारा देश कहीं ना कहीं अपनी मूल छवि खोता जा रहा है। भ्रष्टाचार का कैंसर हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है। यह आतंकवाद से भी बड़ा खतरा बना हुआ है।

मुख्य अनुपालन अधिकारी
प्रधान कार्यालय अनुपालन विभाग

विनोद कुमार पाण्डेय

बैंक और ग्राहक सेवा

हमारे परिसर में ग्राहक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आगंतुक है, वह हम पर आश्रित नहीं है, हम उस पर आश्रित हैं। वह हमारे कार्य में बाधा नहीं है, वह हमारे व्यापार के लिए एक बाहरी व्यक्ति नहीं है, वह इसका हिस्सा है। हम उसे सेवा देकर उसे कोई लाभ नहीं दे रहे हैं बल्कि हमें ऐसा करने का अवसर देकर वह हमें लाभ दे रहा है। – महात्मा गांधी

ग्राहक के संबंध में महात्मा गांधी जी द्वारा कहा गया उपरोक्त संबोधन आज के संदर्भ में बैंकिंग के क्षेत्र में शत–प्रतिशत सही है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में जो निरंतर आगे बढ़ा वही अपना वजूद कायम रख सका और बैंक भी इससे अछूते नहीं हैं। आज मनुष्य के पास सबसे अधिक अभाव समय का है। प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य जल्दी से जल्दी निपटाना चाहता है और सर्वोत्तम सेवा की अपेक्षा भी रखता है। आज के युग में आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग और उत्तम ग्राहक सेवा ही नित परिवर्तनशील बैंकिंग के दो मुख्य आधार हैं जिन पर बैंक की प्रगति निर्भर करती है। वैसे तो प्रत्येक संस्था ग्राहक की संतुष्टि को सर्वोच्च स्थान देती है, लेकिन हमारे बैंक का तो सूत्र वाक्य ही है – "जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है" अर्थात हमारे बैंक की तो नींव ही सेवा पर आधारित है इसलिए ग्राहक सेवा का स्तर इतना ऊंचा होना चाहिए कि कार्य पूरा होने पर ग्राहक प्रसन्न होकर ही बैंक से बाहर जाए। बैंक की लाभप्रदता संपूर्ण रूप से निर्भर करती है ग्राहक की अपेक्षाओं पर खरा उतर कर उसकी सेवा के बदले कमीशन, ब्याज, सर्विस–टैक्स आदि प्राप्त करने पर। यदि बैंकर को अपने शिखर पर पहुँचना है तो ग्राहक को ही केंद्र में रखकर अपनी नीतियाँ बनानी होंगी।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण से पूर्व की स्थिति बिलकुल अलग थी। यह कहना गलत नहीं होगा कि तब बैंक अभिजात्य वर्ग के लिए ही थे, आम आदमी की तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं थी लेकिन सन् 1969 में 14 तथा उसके पश्चात सन् 1980 में 06 बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात आम जन के हृदय में भी बैंकों के प्रति विश्वास का बीज रोपित हुआ और धीरे–धीरे यह पनपने लगा। पिछले कुछ वर्षों में तो अभिजात्य और मध्यम वर्ग के साथ–साथ जन–धन खातों की कुछ ऐसी हवा चली कि आम जन का जीवन और उनकी जीवन शैली में बैंकों का एक बड़ा प्रभाव है। लेकिन इसके साथ ही आज के ग्राहक चाहें वे शहरी क्षेत्र के हों या ग्रामीण क्षेत्र के, सभी अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं जागरूक हैं तथा बैंकिंग की भी अच्छी जानकारी रखते हैं, इसलिए ग्राहकों की अपेक्षाएं भी अब पहले से कहीं अधिक बढ़ गई हैं और ऐसे समय में जब सरकारी बैंकों के साथ प्राइवेट बैंक भी बड़ी संख्या में हैं, ग्राहक बैंकों के चयन के लिए स्वतंत्र हैं, न कि बैंक ग्राहकों के चयन के लिए, इसका सीधा सा तात्पर्य यह ही है कि बेहतर ग्राहक सेवा और ग्राहक की संतुष्टि ही बैंक की उन्नति का एकमात्र विकल्प है।

कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के तत्व और सौंदर्य का रंग भरता है। – डॉ. रामकुमार वर्मा

बैंक में हमारे पास कई तरह के ग्राहक आते हैं, जिसमें सबसे पहला स्थान है हमारे स्थायी ग्राहकों का, ये वह ग्राहक हैं जिन्हें बैंक पर विश्वास है कि उनका कार्य सही तरह से निष्पादित हो जाएगा, ये बैंक के कार्य से संतुष्ट होते हैं। किंतु ध्यान हमें इनका भी अवश्य रखना होगा क्योंकि यह तो बैंक के लिए निःशुल्क विज्ञापन की तरह हैं। एक संतुष्ट ग्राहक बैंक में कई अन्य ग्राहकों को न केवल आकर्षित करता है बल्कि बैंक की साख को बढ़ाता है। इसके विपरित दूसरे वे ग्राहक होते हैं जो बैंक में अंदर आते ही बैंक की, वहाँ के इफ्रास्ट्रक्चर की, कर्मचारियों की आलोचना करना आरंभ कर देते हैं। यह चाहते हैं कि सबसे पहले इनका काम ही किया जाए। ऐसे ग्राहक बहुत संवेदनशील होते हैं। जोर से बोलना, कमियाँ निकालना, बात बात पर शिकायत करना जैसे इनकी आदत ही होती है। इनका ध्यान तो स्थायी ग्राहकों से भी अधिक रखना होगा। अत्यंत शांति एवं धैर्यपूर्वक इनकी बात को सुनना और उसका समाधान करना और अंत में इन्हें बैंक का ग्राहक होने के लिए धन्यवाद भी देना आवश्यक है। इनको संतुष्ट रखने का यही उपाय है। रहीम जी का जगप्रसिद्ध दोहा है –

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे से फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय ।।

जिस प्रकार एक संतुष्ट ग्राहक दस भावी ग्राहकों को बैंक में ला सकता है, उसी प्रकार एक असंतुष्ट ग्राहक दस भावी ग्राहकों को भड़का भी सकता है। इसलिए बैंक शाखा के फ्रंट लाइन स्टाफ को अपने सभी ग्राहकों से शालीनतापूर्वक विनम्र व्यवहार करना चाहिए। बैंक के सभी उत्पादों व सेवा संबंधी सही जानकारी भी पूर्ण रूप से होनी चाहिए, क्योंकि भ्रामक जानकारी व्यापार की गति में व्यवधान उत्पन्न करती है, अविश्वास को बढ़ाती है और यदि ग्राहक की भाषा में ही ग्राहक को जानकारी दी जा सके तो यह तो सोने पर सुहागा होगा। एक सी भाषा का प्रयोग ग्राहक से घनिष्ठता तथा विश्वास को कई गुणा बढ़ा देता है और बैंक का ग्राहक के साथ एक अटूट बंधन बन जाता है। ग्राहक हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है, इन पंक्तियों से आप समझ सकते हैं–

वेतन का भुगतान करने वाला नियोजक नहीं है, वह तो केवल मुद्रा को संभालने वाला है। यह तो ग्राहक है जो वेतन का भुगतान करता है।

– हेनरी फोर्ड

स्थायी ग्राहक संस्था के साथ बने रहें, वर्तमान ग्राहक सतत् बैंक से जुड़े रहें और हम सबके सकारात्मक प्रयास जारी रहें जिससे कि निरंतर संस्था से नए ग्राहक जुड़ते रहें तब ही बैंक प्रगति की राह पर नित नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर हो पाएगा।

आँचलिक प्रबंधक, दिल्ली –II

ମିଲନ କୁମାର ମହାପାତ୍ର

ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ରଥ ଯାତ୍ରା

ଓଡିଶା ର ରଥ ଯାତ୍ରା ଏକ ମହାନ ପର୍ବ ଭାବରେ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱ ରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ଲାଭ କରିଛି । ରଥ ଯାତ୍ରା କେମିତି ଭାବରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହୁଏ ତାହା ଜାଣିବା ପୂର୍ବ ରୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଏବଂ ରଥ ଯାତ୍ରା ର ଇତିହାସ ଜାଣିବା ଆବଶ୍ୟକ

କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ତଥା ପୌରାଣିକ ଆଖ୍ୟାୟିକା ଅନୁଯାୟୀ, ଜାରା ଶବର ଶରରେ ପ୍ରାଣ ଛାଡ଼ିଲେ ଦ୍ୱାରକାଧିପତି ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ । ଶେଷତମ ଆତ୍ମୀୟ ଭାବରେ ପାଣ୍ଡବଗଣ ସଖା ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ଶରୀରକୁ ଦାହ କରିବା ପାଇଁ ଚେଷ୍ଟାକରି ବିଫଳ ହେଲେ, କାରଣ ଅଗ୍ନିର ଦାହିକା ଶକ୍ତି ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣବ୍ରହ୍ମ ସ୍ୱରୂପ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ଶରୀରକୁ ପଞ୍ଚଭୂତରେ ବିଲୀନ କରିବାର ସାମର୍ଥ୍ୟ ନ ଥିଲା । ଶୂନ୍ୟବାଣୀ ହେଲା- କୃଷ୍ଣଙ୍କର ନାଭିକମଳ ଅଗ୍ନିରେ ଭସ୍ମ ହେବନାହିଁ, ତୁମେମାନେ ତାହାକୁ ମହୋଦଧିରେ ବିସର୍ଜନ କରିଦିଅ ପାଣ୍ଡବମାନେ ତାହାହିଁ କଲେ। ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କର ଅର୍ଦ୍ଧଦଗ୍ଧ ପିଣ୍ଡ ଦାରୁରୂପରେ ଓଡିଶା ର ବାଙ୍କୀ ମୁହାଣରେ ଆବିର୍ଭାବ ହେଲା । ସମୁଦ୍ରରେ ଭାସୁଥିବା ସେହି ଦାରୁକୁ ଆଣି ରାଜା ଇନ୍ଦ୍ରଦ୍ୟୁମ୍ନ ଶ୍ରୀଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିରରେ ରଖିଥିଲେ । ସମସ୍ତେ କଥା କୁ କାଟିବା ପାଇଁ ଉଦ୍ୟମ କରି ବିଫଳ ହେଲେ ତାପରେ ସ୍ୱୟଂ ବିଶ୍ୱକର୍ମା ଜଣେ ବୃଦ୍ଧ ବେଶରେ ଆସି ସେହି ଦାରୁରେ ମୂର୍ତ୍ତି ପ୍ରସ୍ତୁତ କଲେ। ସର୍ତ୍ତ ଥିଲା ଏକୋଇଶ ଦିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୂର୍ତ୍ତି ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ନହେବା ଯାଏ ଦ୍ୱାର ଖୋଲାଯିବ ନାହିଁ । ମାତ୍ର ରାଜା ଙ୍କ ଆଦେଶ ରେ ପନ୍ଦର ଦିନ ପରେ ଦ୍ୱାର ଖୋଲାଗଲା ମୂର୍ତ୍ତିନିର୍ମାଣ କରୁଥିବା ବୃଦ୍ଧ ଉଭାନ ହୋଇଗଲେ । କେବଳ ଅଧାଗଢା ମୂର୍ତ୍ତି ରହିଗଲା ଏବଂ ଅଧାଗଢ଼ା ମୂର୍ତ୍ତିକୁ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରାଗଲା । ସେହି ସମୟରେ ମହାପ୍ରଭୁ କହିଥିଲେ : ହେ ରାଜା, ବର୍ଷକୁ ଥରେ ଜନ୍ମଭୂମିକୁ ଆଣିବ। ସେଥିପାଇଁ ଶ୍ରୀଜୀଉମାନେ ଗୁଣ୍ଡିଚାଘରକୁ ବୁଲି ଯାଆନ୍ତି ଓ ବାହୁଡ଼ନ୍ତି। ଶ୍ରୀଗୁଣ୍ଡିଚା ଦିନ ପ୍ରତ୍ୟୁଷରୁ ଠାକୁରମାନଙ୍କର ମଙ୍ଗଳ ଆଳତି, ମଇଲମ, ଅବକାଶ, ରୋଷ ହୋମ, ସୂର୍ଯ୍ୟ ପୂଜା, ଦ୍ୱାରପାଳ ପୂଜା, ବେଶ ଇତ୍ୟାଦି ନୀତି ଉକ୍ତ ଦିନର ପାଳିଆ ସେବକମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ସମାପିତ ହୋଇଥାଏ। ଅପରପକ୍ଷରେ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିର ପୁରୋହିତ ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଶୋତ୍ରୀୟ ବ୍ରାହ୍ମଣମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ରଥ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କାର୍ଯ୍ୟ ହୋଇଥାଏ। ତାପରେ ଠାକୁରମାନଙ୍କ ମନମୁଗ୍ଧକର ପହଣ୍ଡି ନୀତି ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବା ପୂର୍ବରୁ ବିଜେ କାହାଳି ବାଜି ମଙ୍ଗଳାପର୍ଣ ନୀତି ଆଗକୁ ବଢିଥାଏ। ପହଣ୍ଡି ସମୟରେ ପ୍ରଥମେ ଶ୍ରୀସୁଦର୍ଶନ, ଶ୍ରୀବଳଭଦ୍ର, ଶ୍ରୀସୁଭଦ୍ରା ଓ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ଧାଡି ପହଣ୍ଡିରେ ବିଜେ ହୋଇଥାନ୍ତି। ଜଗମୋହନ ଠାରେ ଘଣ୍ଟ , ପକାଉଜ ଇତ୍ୟାଦି ବାଦ୍ୟ ବାଜିଥାଏ। ଠାକୁରମାନେ ଜଗମୋହନର ସାତ ପାହଚ ଉପରେ ପହଞ୍ଚିବା କ୍ଷଣି ରାଘବ ଦାସ ମଠ ପ୍ରଦତ୍ତ ଟାହିୟା' ଶ୍ରୀମସ୍ତକରେ ଲଗାଯାଇଥାଏ। ପହଣ୍ଡି ସମୟରେ ବେହେରା ଖୁଣ୍ଟିଆ ମଣିମା ଡାକ ଦେଇଥାନ୍ତି। ସମଗ୍ର ବଡ଼ ଦେଉଳ ଓ ସିଂହଦ୍ୱାର ଅଞ୍ଚଳ ହୁଳହୁଳି, ହରିବୋଲ, ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ ଓ ଦେବ ଧ୍ୱନି ଶବ୍ଦରେ ପ୍ରକମ୍ପିତ ହୋଇଥାଏ। ଶ୍ରୀବିଗ୍ରହମାନେ ରଥାରୁଢ଼ ହେବାପରେ ପୁଷ୍ପାଳକ ମହାଜନମାନେ ଶ୍ରୀମଦନମୋହନଙ୍କୁ ନନ୍ଦିଘୋଷ ରଥରେ ଏବଂ ରାମ, କୃଷ୍ଣ ବିଗ୍ରହଙ୍କୁ ତାଳଧ୍ୱଜ ରଥ ଉପରେ ଅଧିଷ୍ଠିତ କରାଇଥାନ୍ତି। ଏହା ପରେ ପାରମ୍ପାରିକ ନୀତିରେ ଗଜପତି ମହାରାଜାଙ୍କଦ୍ୱାରା ଛେରାପହଁରା ନୀତି ସମ୍ପାଦିତ ହୋଇଥାଏ। ଏଥି ପୂର୍ବରୁ ଶ୍ରୀବିଗ୍ରହମାନଙ୍କ ନୀତି ପାଇଁ ଆବଶ୍ୟକ ଥିବା ଦୈନନ୍ଦିନ ସାଜ ବସ୍ତ୍ର ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ନିତ୍ୟ ବ୍ୟବହାର୍ଯ୍ୟ ଜିନିଷ ସେବକମାନେ ରଥ ଉପରେ ଆଣି ରଖିଥାନ୍ତି। ଛେରା ପହଁରା ନୀତି ଶେଷ ହେବା ପରେ ରଥରେ ସାରଥୀଙ୍କୁ ଅଧିଷ୍ଠିତ କରାଯାଏ। ରଥରୁ ଚାରମାଳ ଖୋଲାଯିବା ପରେ ଘୋଡା ବନ୍ଧାଯାଏ। ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସରିବା ପରେ ରଥରେ ଦଉଡି ଲଗାଯାଇ ରଥଟଣା ହୋଇଥାଏ। ରଥଯାତ୍ରା ଜଗନ୍ନାଥ ମନ୍ଦିରରେ ପାଳିତ ଦ୍ୱାଦଶ ଯାତ୍ରାର ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରଧାନ । ଏହି ଯାତ୍ରା ଘୋଷ ଯାତ୍ରା, ମହାବେଦୀ ମହୋତ୍ସବ, ପତିତପାବନ ଯାତ୍ରା, ଦକ୍ଷିଣାମୁଖୀ ଯାତ୍ରା, ନବଦିନ ଯାତ୍ରା, ଦଶାବତାର ଯାତ୍ରା, ଗୁଣ୍ଡିଚା ମହୋତ୍ସବ ଓ ଆଡ଼ପ ଯାତ୍ରା ନାମରେ ବିଭିନ୍ନ ଶାସ୍ତ୍ର, ପୁରାଣ ଓ ଲୋକ କଥାରେ ଅଭିହିତ । ଜଗନ୍ନାଥ, ବଳଭଦ୍ର, ସୁଭଦ୍ରା ଓ ସୁଦର୍ଶନ ତିନିଗୋଟି ରଥରେ ପୁଷ୍ୟାନକ୍ଷତ୍ରଯୁକ୍ତ ଆଷାଢ଼ ଶୁକ୍ଳ ଦ୍ୱିତୀୟା ତିଥିରେ ବିଜେ କରି ଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିରକୁ ଯାଇ ସେଠାରେ ସପ୍ତାହକାଳ ଅବସ୍ଥାନ କରି ଦଶମୀ ଦିନ ସେଠାରୁ ବଡ଼ଦେଉଳକୁ ଫେରିଆସିଥାନ୍ତି । ଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିରକୁ ମାଉସୀ ମା ମନ୍ଦିର ନାମରେ ମଧ୍ୟ ପରିଚିତ । ଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିରକୁ ଯିବା ଦିନକୁ ‘‘ରଥଯାତ୍ରା’’ ବା ‘‘ଗୁଣ୍ଡିଚା ଯାତ’’ ଓ ଫେରିବା ଦିନକୁ ‘‘ବାହୁଡ଼ା ଯାତ୍ରା ବା ବାହୁଡ଼ା ଯାତ’’ ବୋଲି କୁହାଯାଏ । ପରମ୍ପରା ଅନୁସାରେ ଘୋଷଯାତ୍ରାର ଆଗେ ଆଗେ ବଡ଼ଭାଇ ବଳଭଦ୍ରଙ୍କ ରଥ ‘ତାଳଧ୍ୱଜ’, ତାଙ୍କ ପଛେ ପଛେ ଦେବୀ ସୁଭଦ୍ରାଙ୍କ ‘ଦର୍ପଦଳନ’ ଓ ସର୍ବଶେଷରେ ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ‘ନନ୍ଦିଘୋଷ’ ଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିର ଅଭିମୁଖେ ଯାତ୍ରା କରନ୍ତି ।

ବିଭିନ୍ନ ମତରେ ରଥଯାତ୍ରାର ୮ଟି ଅଙ୍ଗ ରହିଛି, ଯାହାକୁ ଅଷ୍ଟାଙ୍ଗ ବିଧି କୁହାଯାଏ ।
ସ୍ନାନ ଉତ୍ସବ,ଅନବସର,ନେତ୍ରୋତ୍ସବ,ଶ୍ରୀଗୁଣ୍ଡିଚା,ହେରାପଞ୍ଚମୀ,ଆଡ଼ପ ପର୍ବ,ବାହୁଡ଼ାଯାତ୍ରା,ନୀଳାଦ୍ରିବିଜେ ।

ପରମ୍ପରା ଅନୁସାରେ ପୁରୀରେ ପ୍ରତିବର୍ଷ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବେ ନୂଆ କାଠରେ ରଥ ତିଆରି ହୋଇଥାଏ । କିନ୍ତୁ ସାରଥି, ଘୋଡ଼ା, ପାର୍ଶ୍ୱ ଦେବଦେବୀ, ସଖୀ ଆଦିମୂର୍ତ୍ତି ଗୁଡ଼ିକ ପ୍ରତ୍ୟେକ ନବକଳେବର ବର୍ଷ ନୂତନ ଭାବରେ ନିର୍ମାଣ କରାଯାଇଥାଏ । ନିମ୍ବ କାଠରେ ମୋଟ ୨୭ ଗୋଟି ପାର୍ଶ୍ୱ ଦେବଦେବୀଙ୍କର ବିଗ୍ରହ ନିର୍ମାଣ କରାଯାଏ । ପ୍ରତିବର୍ଷ ରଥଯାତ୍ରାର ଅଳ୍ପ ଦିନ ପୂର୍ବରୁ ଚିତ୍ରକାର ସେବକମାନେ ଏହି ମୂର୍ତ୍ତିଗୁଡିକୁ ରଙ୍ଗ କରିଥାନ୍ତି । ରଥଯାତ୍ରାର ଦୁଇ ଦିନ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରତି ରଥରେ ପାର୍ଶ୍ୱଦେବତାଙ୍କୁ ଅଧିଷ୍ଠିତ କରାଯାଇଥାଏ। । ପ୍ରତିବର୍ଷ ରଥଯାତ୍ରା ପରେ ରଥଗୁଡ଼ିକୁ ଭାଙ୍ଗି ଦିଆଯାଏ । ପ୍ରତିବର୍ଷ ପୁରୀ ବଡ଼ଦାଣ୍ଡରେ ଥିବା ଶ୍ରୀନଅର ସମ୍ମୁଖସ୍ଥ ରଥଖଳାଠାରେ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଏହି ବିଶ୍ୱବିଦିତ ରଥଯାତ୍ରା ନିମନ୍ତେ ତିନିରଥର ନିର୍ମାଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସଂପନ୍ନ ହୋଇଥାଏ । ରଥକାଠ ପହଞ୍ଚିବା ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି

ରଥଟଣା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟ ଏକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ତିଥିରେ ହୋଇଥାଏ। ରଥ ନିର୍ମାଣର ପରମ୍ପରା ବଢ଼ ନିଆରା, ପ୍ରଥମେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ରଥ କାମ ଆରମ୍ଭ କରାଯାଉଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଥମେ ଦେବୀ ରଥର ଚକ ନିର୍ମାଣ ହୁଏ । ଏହା ପଛରେ ପାରମ୍ପରିକ ମତାମତ ନଥିଲେ ମଧ୍ୟ ବୈଷୟିକ ମତ ରହିଛି । ରଥର ଚକ ଫାସୀ କାଠରେ ନିର୍ମାଣ ହୋଇଥାଏ । ପରମ୍ପରା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ଦେବୀରଥର ଚକ ସବୁଠାରୁ ବଡ଼ (୧୨ ଟି ଚକ ମଧ୍ୟରୁ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଚକର ଉଚ୍ଚତା ୬ ଫୁଟ ୮ ଇଞ୍ଚ) ।

ରଥମାନଙ୍କର ନିର୍ମାଣରେ ଥିବା କିଛି ବିଶେଷତା:

ନନ୍ଦିଘୋଷ: 'ନନ୍ଦିଘୋଷ' ବା 'ଗରୁଡ଼ଧ୍ୱଜ' ବା 'କପିଲଧ୍ୱଜ' ରଥରେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ସହ ମଦନମୋହନ ବିଜେ କରନ୍ତି । ମୋଟ ୮୩୨ ଖଣ୍ଡ କାଠରେ ତିଆରି ଏହି ରଥର ଉଚ୍ଚତା ୪୪ ଫୁଟ ୨ ଇଞ୍ଚ ଅଟେ ।ଏହି ରଥରେ ୧୬ ଟି ଚକ (ବିଷ୍ଣୁସିଦ୍ଧ, ବିଭୂତି, ଅଣିମା, ପ୍ରଜ୍ଞା, ଧୀ, ଜ୍ଞାନ, ପ୍ରେମ, ଆଶକ୍ତ, ରତି, କେଳି, ସତ୍ୟ, ସୁଷୁପ୍ତି, ଜାଗୃତି, ତୁରୀୟ, ଆମ, ନିର୍ବାଣ) ସଂଯୁକ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଚକର ଉଚ୍ଚତା ୬ ଫୁଟ ।
ସାରଥି : ମାତଳୀ
ରଥର ଦଉଡ଼ି : ଶଙ୍ଖଚୂଡ଼, ପରମ୍ପରା ମୁତାବକ ଧଳାରଙ୍ଗର ଚାରୋଟି ଘୋଡ଼ା (ଶଙ୍ଖ, ବଳାହକ, ଶ୍ୱେତ ଓ ହରିଦ୍ୱାଶ) ସ୍ଥାପନ କରାଯାଏ ।ଏହାର ପତାକା ଗରୁଡ଼ ଚିହ୍ନାଙ୍କିତ ।
ଧ୍ୱଜପମୂର୍ତ୍ତି: ପଞ୍ଚମୁଖୀ ହନୁମାନ । ନାଲି ଓ ହଳଦିଆ ରଙ୍ଗର କପଡ଼ା ରେ ରଥାବରଣ କରାଯାଏ । ନନ୍ଦିଘୋଷରେ ହରିହର, ପଞ୍ଚ ନୃସିଂହ, ଗିରିଧର, ଷଡ଼ଭୁଜ ଚିନ୍ତାମଣି କୃଷ୍ଣ, ଚତୁର୍ଭୁଜ ନାରାୟଣ, ସପ୍ତଫେଣ ସର୍ପରେ ଆସୀନ ମଧୁସୂଦନ ବା ବିଷ୍ଣୁ, ଲକ୍ଷ୍ମଣ, ପଞ୍ଚମୁଖୀ ମହାବୀର ପାର୍ଶ୍ୱଦେବ/ଦେବୀ ଭାବେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥାନ୍ତି ।

ତାଳଧ୍ୱଜ: 'ତାଳଧ୍ୱଜ' ବା 'ଲଙ୍ଗଳ ଧ୍ୱଜ' ରଥରେ ବଳଭଦ୍ରଙ୍କ ସହ ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଜେ କରନ୍ତି। ମୋଟ ୭୬୩ ଖଣ୍ଡ କାଠରେ ତିଆରି ଏହି ରଥର ଉଚ୍ଚତା ୪୩ ଫୁଟ ୩ ଇଞ୍ଚ ଅଟେ । ଏହି ରଥରେ ୧୪ ଟି ଚକ ସଂଯୁକ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଚକର ଉଚ୍ଚତା ୬ ଫୁଟ ୬ ଇଞ୍ଚ।
ଦଧିନଉତି : ହିରଣ୍ମୟୀ ।
ସାରଥି : ଦାରୁକ ।
ରଥର ଦଉଡ଼ି : ବାସୁକୀ । ପରମ୍ପରା ମୁତାବକ କଳା ରଙ୍ଗର ଚାରୋଟି ଘୋଡ଼ା ଘୋଡ଼ା (ଶଙ୍ଖ, ସୁଚିତ୍ର, ଅଙ୍ଗଦ, ମେଘନାଦ) ସ୍ଥାପନ କରାଯାଏ ।
ଧ୍ୱଜପମୂର୍ତ୍ତି : ଲକ୍ଷ୍ମୀନୃସିଂହ । ନାଲି ଓ ସବୁଜ ରଙ୍ଗର କପଡ଼ା ରେ ରଥାବରଣ କରାଯାଏ । ତାଳଧ୍ୱଜ ରଥରେ ମହାଦେବ, ବାଇଶିଭୁଜ ନୃସିଂହ, ବଳରାମ, ନୃତ୍ୟ ଗଣପତି, ଲକ୍ଷ୍ମଣଙ୍କୁ ବହନ କରିଥିବା ଅଙ୍ଗଦ, ନାଟାମ୍ବର (ବୃଷଭ ଉପରେ ନୃତ୍ୟରତ ଶିବ), କାର୍ତ୍ତିକେଶ୍ୱର, ମଧୁକୈଟବଙ୍କ ସହ ବିଷ୍ଣୁଙ୍କ ଯୁଦ୍ଧ, ଅନନ୍ତବାସୁଦେବ ପାର୍ଶ୍ୱଦେବ/ଦେବୀ ଭାବେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥାନ୍ତି ।

ଦର୍ପଦଳନ: 'ଦର୍ପଦଳନ' ବା 'ପଦ୍ମଧ୍ୱଜ' ବା 'ଦେବଦଳନ' ରଥରେ ସୁଭଦ୍ରାଙ୍କ ସହ ଶ୍ରୀସୁଦର୍ଶନ ବିଜେ କରନ୍ତି । ମୋଟ ୫୯୩ ଖଣ୍ଡ କାଠରେ ତିଆରି ଏହି ରଥର ଉଚ୍ଚତା ୪୨ ଫୁଟ ୩ ଇଞ୍ଚ ଅଟେ ।ଏହି ରଥରେ ୧୨ ଟି ଚକ ସଂଯୁକ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଚକର ଉଚ୍ଚତା ୬ ଫୁଟ ୮ ଇଞ୍ଚ ।
ସାରଥି : ଅର୍ଜୁନ ।
ରଥର ଦଉଡ଼ି : ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣଚୂଡ଼ ।
ଧ୍ୱଜପମୂର୍ତ୍ତି : ଜୟଦୁର୍ଗା । ପରମ୍ପରା ମୁତାବକ ନାଲି ଚାରୋଟି ଘୋଡ଼ା (ରୋଚିକା, ମୋଚିକା, ଜିତା, ଅପରାଜିତା) ସ୍ଥାପନ କରାଯାଏ । ନାଲି ଓ କଳା ରଙ୍ଗର କପଡ଼ା ରେ ରଥାବରଣ କରାଯାଏ । ଦର୍ପଦଳନରେ ବିମଳା, ମଙ୍ଗଳା, ବାରାହୀ, ଭଦ୍ରକାଳୀ, ବନଦୁର୍ଗା ବା କଙ୍କାଡ଼ି, କାତ୍ୟାୟନୀ , ହରଚଣ୍ଡୀ, ରାମଚଣ୍ଡୀ , ଅଘୋରା ପାର୍ଶ୍ୱଦେବ/ଦେବୀ ଭାବେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥାନ୍ତି ।

ସୁଦର୍ଶନ ଓ ସୁଭଦ୍ରା ଦଇତାପତିମାନଙ୍କ ହସ୍ତ ଓ ସ୍କନ୍ଧାବଲମ୍ବନ ପୂର୍ବକ ପହଣ୍ଡି ବିଜେ ହୋଇ ରଥାରୋହଣ କରିଥିବା ବେଳେ ଜଗନ୍ନାଥ ଓ ବଳଭଦ୍ରଙ୍କୁ ଦଇତାପତି ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସେବକମାନେ ପାଟ ଡୋରିରେ ବା ରଜ୍ଜୁ ଦ୍ୱାରା ଆକର୍ଷଣ କରି ଧିରେ ଧିରେ ପହଣ୍ଡି ବିଜେ କରାଇଥାନ୍ତି । ଭକ୍ତ ତଥା ଦର୍ଶନାର୍ଥୀମାନେ ଏହି ସମୟରେ ପୁଷ୍ପବର୍ଷଣ କରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ହରିବୋଲ ଓ ହୁଳହୁଳିର ପବିତ୍ର ଧ୍ୱନିରେ ସମଗ୍ର ପରିବେଶକୁ ଆନନ୍ଦିତ ମୁଖରିତ କରିଥାନ୍ତି । ଶ୍ରୀଗୁଣ୍ଡିଚା ଯାତ୍ରା ଓ ବାହୁଡ଼ା ଯାତ୍ରାର ଅନ୍ୟତମ ମୁଖ୍ୟ ଆକର୍ଷଣ ହେଉଛି ପୁରୀ ଗଜପତି ମହାରାଜାଙ୍କ ତିନି ରଥ ଉପରେ ଛେରାପହଁରା ସେବା । ଏହି ଛେରାପହଁରା ନୀତିକୁ ଦେଖିବା ଲାଗି ଉଭୟ ସିଂହଦ୍ୱାର ଓ ଗୁଣ୍ଡିଚା ମନ୍ଦିରଠାରେ ଲକ୍ଷାଧିକ ଭକ୍ତ ତଥା ଜନସାଧାରଣଙ୍କ ସମାଗମ ହୋଇଥାଏ । କେତେକ ଐତିହାସିକ, ପ୍ରାବନ୍ଧିକ ଏବଂ ଗବେଷକମାନଙ୍କ ମତରେ ସୂର୍ଯ୍ୟବଂଶୀ ରାଜା କପିଳେନ୍ଦ୍ର ଦେବଙ୍କ ସମୟରେ ଏହି ଛେରା ପହଁରା ନୀତି ଆରମ୍ଭ

ହୋଇଥିଲା । ରଥଯାତ୍ରା ଦିନ ଗଜପତି ମହାରଜ ମନ୍ଦିର ଆଗରେ ଥିବା ପାହାଚକୁ ସୁନାର ପହଁରାରେ ଓଳାନ୍ତି । ଗଜପତି ଦିବ୍ୟସିଂହ ଦେବଙ୍କ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଠାକୁରମାନଙ୍କ ପହଣ୍ଡି ବେଳେ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିର ଆଗରେ ପାହଚ ଓ ରାସ୍ତକୁ ସୁନା ଖଡିକାରେ ଓଳାଇବା ବିଧି ବଳବତ୍ତର ଥିଲା । ମାତ୍ର ତାଙ୍କ ରୁଗ୍ଣ ପୁତ୍ର ରାଜା ମୁକୁନ୍ଦ ଦେବଙ୍କ ସମୟରେ ରଥ ଉପରର ଚତୁଃପାର୍ଶ୍ୱ ଛେରା ପହଁରାର ନୂତନ ବିଧି ବିଧାନ ହୋଇଥିଲା ଏବଂ ଏହି ପ୍ରଥା ଅଦ୍ୟାବଧି ଅନୁସୃତ ହୋଇ ଆସୁଅଛି । ସର୍ବପ୍ରଥମେ ବଳଭଦ୍ର ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କ ତାଳଧ୍ୱଜ ରଥ ଟଣାଯାଏ । ସମତାଳରେ ଉଭୟ ଭଟିମୁଣ୍ଡା ଓ ପୁରୀ ଘଣ୍ଟୁଆମାନେ ଏହି ସମୟରେ ଘଣ୍ଟ ବଜାଇଥାନ୍ତି । ଡାହୁକ ରଥ ଉପରେ ଠିଆ ହୋଇ ଯୋଡ଼ି ଲମ୍ବା ବେତ ଧରି ରଥ ବୋଲି ଗୀତ ଗାଇ ଭକ୍ତଜନଙ୍କୁ ଆମୋଦିତ କରିଥାନ୍ତି । ସର୍ବ ଧର୍ମ ନିର୍ବିଶେଷରେ ଲକ୍ଷ ଲକ୍ଷ ଶ୍ରଦ୍ଧାଳୁ ଭକ୍ତ ରଥ ଦଉଡ଼ି ଧାରଣ ପୂର୍ବକ ଆନନ୍ଦ ମନରେ ରଥକୁ ଟାଣିଥାନ୍ତି । ଭକ୍ତମାନଙ୍କ ହରିବୋଲ, ହୁଳହୁଳି, ସଂକୀର୍ତ୍ତନ ଇତ୍ୟାଦିରେ ସମଗ୍ର ବଡ଼ଦାଣ୍ଡ ଏକ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପରିବେଶ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଥାଏ। ତାଳଧ୍ୱଜ ରଥ ପରେ ଦେବୀ ସୁଭଦ୍ରାଙ୍କ ଦେବଦଳନ ଓ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ନନ୍ଦିଘୋଷ ରଥ ଟଣା ଯାଇଥାଏ । ମାଉସୀ ଘରେ ସାତ ଦିନ ରହିବା ପରେ ପୁଣି ଥରେ ଶ୍ରୀଜୀଉମାନେ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରକୁ ପ୍ରତ୍ୟାବର୍ତ୍ତନ କରନ୍ତି, ଏହାକୁ ବାହୁଡ଼ା ଯାତ୍ରା କୁହାଯାଏ ।

ଜଗତ ର ନାଥ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଏହି ରଥ ଯାତ୍ରା ଦେଖିବାକୁ ଲକ୍ଷାଧିକ ଲୋକ ବିଶ୍ୱ ର ଚତୁର୍ପାର୍ଶ୍ୱରୁ ଆସନ୍ତି। ଏକ ଅଲଗା ପ୍ରକାର ଅନୁଭୁତି ଥାଏ ଏହି ରଥ ଯାତ୍ରା ନିଜ ସ୍ୱଚକ୍ଷୁ ରେ ଦେଖିବାର, ଜଗନ୍ନାଥ ନିଜ ରଥ ଉପରେ ବସିଥିବେ ଭକ୍ତଗଣ ଦୌଡ଼ି ଭିଡି ଟାଣୁଥିବେ ଏହି ମନୋରମ ଦୃଶ୍ୟ ଦେଖି ଲୋମ ଟାଙ୍କୁରୀ ଉଠେ, ଆଖିରୁ ଖୁସି ର ଲୁହ ଝରି ଯାଏ । କୁହନ୍ତି ଭାଗ୍ୟ ରେ ଥିଲେ ଯାଇ ରଥ ଉପରେ ଜଗନ୍ନାଥ ଙ୍କ ଦର୍ଶନ ସମ୍ଭବ । ରଥ ଯାତ୍ରା ରେ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ସମସ୍ତ ଭକ୍ତଙ୍କ ମନୋସ୍କାମନା ପୁରଣ କରନ୍ତି।

ଜୋନାଲ ଅଫିସ୍ , ଚେନ୍ନାଇ

मिलन कुमार माहपात्रा

जगन्नाथ की रथयात्रा

ओडिशा की रथ यात्रा को एक महान त्यौहार के रूप में दुनिया भर में प्रसिद्धि मिली है। रथ यात्रा कैसे सम्पन्न होता है ये जानने से पहले जगन्नाथ और रथ यात्रा के इतिहास को जानना होगा।

किंवदंती और पौराणिक कथाओं के अनुसार, जारा के तीर से भगवान श्री कृष्ण ने अपने प्राण त्याग दिये। अंतिम परिजनों के रूप में, पांडव अपने दोस्त कृष्ण के शरीर को जलाने का प्रयास करने में विफल रहे, क्योंकि वह अग्नि की जलाने की शक्ति में पूर्ण ब्रह्मा के रूप में भगवान कृष्ण के शरीर को पंचभूत में भंग करने में असमर्थ थी। तभी अचानक यह कहा गया कि कृष्ण की नाभि को आग में नहीं जलाया जाएगा उसे समुंदर मे विसर्जन कर दो और पांडवो ने वही किया। भगवान कृष्ण का आधा जला हुआ पिंड लकड़ी के रूप में ओडिशा के बाँकी में आविर्भाव हुआ। राजा इन्द्रद्युम्न ने समुद्र में तैरती लकड़ी को लाकर श्रीगुंडिचा मंदिर में रख दी। सब ने उस लकड़ी को काटने की कोशिश की पर विफल रहे तभी विश्वकर्मा स्वयं एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में आए और उस लकड़ी से एक मूर्ति बनाई। पर उनकी शर्त यह थी कि इक्कीस दिन तक प्रतिमा पूरी होने तक दरवाजा नहीं खोला जाएगा। लेकिन राजा के आदेश से पंद्रहवे दिन दरवाजा खोला गया। मूर्ति बनाने वाले वृद्ध गायब हो गए थे। केवल आधी–अधूरी प्रतिमा ही रह गई और आधी–अधूरी प्रतिमा को मंदिर में स्थापित कर दिया गया। उस समय प्रभु ने कहाः हे राजा, आप मुझे वर्ष में एक बार मेरी मातृभूमि में लाएंगे। इसलिए भगवान गुंडिचाघर जाते हैं और लौट आते हैं।

श्रीगुंडिचा दिवस के दिन से, ठाकुरों के मंगल आरती, अब कश, रोश होम, सूर्य पूजा, द्वारपाल पूजा, बाश, आदि को उस दिन के पालक भक्तों द्वारा पूरा किया जाता है। दूसरी ओर, रथ की स्थापना मंदिर के पुजारी और अन्य ब्राह्मणों द्वारा की जाती है। फिर, ठाकुरों को प्रभावशाली पहण्डी के साथ मंगलार्पण नीति को आगे बढ़ाया जाता है। पहण्डी के दौरान, श्री सुदर्शन, श्री बलभद्र, श्री सुभद्रा और श्री जगन्नाथ पहले पहण्डी में आते हैं। जगमोहन घंटी, ढ़ोल आदि बजाया जाता है। जैसे ही ठाकुर जगमोहन के सात सीढ़ियों पर पहुँचते हैं, राघव दास मठ द्वारा दी गई ताहिया को श्रीमस्तक में लगा दिया जाता है। पहण्डी के दौरान पूरा सिंघद्वार इलाका जय जगन्नाथ और देव ध्वनि से गूंज उठता है। श्री विग्रहों को रथ पर चढ़ाने के बाद, फूलवादियों ने नंदीघोष रथ पर श्री मदनमोहन और तालाध्वज रथ पर राम और कृष्ण को स्थापित किया गया है। इसके बाद गजपति महाराजा की छेरा–पंहरा की पारंपरिक नीति है। जगन्नाथ मंदिर में मनाए जाने वाले बारह यात्रा में से एक है। रथ यात्रा को घोष यात्रा, महाबदी महोत्सव, पतितपावन यात्रा, दक्षिणमुखी यात्रा, नवदीन यात्रा, दशावत यात्रा, गुंडिचा महोत्सव और विभिन्न शास्त्रों, पौराणिक कथाओं और लोककथाओं में आदि यात्रा के रूप

में जाना जाता है।

विभिन्न स्रोतों के अनुसार, रथ यात्रा के आठ भाग हैं, जिन्हें अष्टांग विधि कहा जाता है।

स्नान पर्व, अनबसार, नेत्रोत्सव, श्रीगुंडिचा, हेरापंचमी, आडाप उत्सव, बाहुदयात्रा, नीलाद्रिबिज

परंपरा के अनुसार, पुरी में रथ हर साल पूरी तरह से नई लकड़ी से बनाई जाती हैं। लेकिन रथ, घोड़े, सह देवता, सखियां, आदि की प्रतिमाओं को हर साल फिर से बनाया जाता है। कुल 24 सह देवता नीम की लकड़ी से बने हैं। हर साल, पहण्डी के कुछ दिन पहले, चित्रकार प्रतिमाओं को रंगते हैं। पहण्डी से दो दिन पहले प्रत्येक रथ पर सह मूर्तियाँ रखी जाती हैं। पहण्डी के बाद रथों को हर साल तोड़ दिया जाता है। हर साल मंदिर के सामने तीनों रथ बनाया जाता है। पुराने समय से, इस उद्देश्य के लिए विभिन्न कार्य निर्धारित किए गए हैं और सभी कार्य निर्धारित रूप से पूरे किए जाते हैं। रथ के आगमन से लेकर रथयात्रा सम्पन्न तक सब कुछ एक विशिष्ट तिथि पर किया जाता है। रथों के निर्माण की परंपरा बहुत न्यारी है, सबसे पहले जब जगन्नाथ के रथ का काम शुरू होता है, तो सबसे पहले देवी के रथ के पहिए बनते हैं। इसके पीछे कोई पारंपरिक राय नहीं है, लेकिन तकनीकी राय हैं। रथ का पहिया फासी लकड़ी का बना होता है। परंपरागत रूप से, देवी का पहिया सबसे बड़ा है (प्रत्येक 12 पहियों में से प्रत्येक पहिया 6 फीट 8 इंच ऊंचा है)।

रथों के निर्माण की कुछ विशेषताएं

नंदीघोषः मदनमोहन जगन्नाथ नंदीघोष या 'गरुड़ध्वज' या 'कपिलध्वज' के रथ में बिराजमान होते हैं। रथ कुल 832 टुकड़ों की लकड़ी से बनता है और 44 फीट 2 इंच ऊंचा होता है। रथ में 16 पहिये (विष्णुसिद्ध, विभूति, अणिमा, प्रज्ञा, धी, ज्ञान, प्रेम, अष्टक, रति, केली, सत्य, सुस्वास्ति, जागृति, तुरिया, आम, निर्वाण) जुड़े होते हैं।

सारथीः मतली

रथ की रस्सीः शंखचूड़, परंपरागत रूप से चार सफेद घोड़े (शंख, वलाहक, श्वेत और हरीदवास) स्थापित किए जाते हैं। ध्वज में एक गरुड़ चिह्नित किया गया है।

ध्वजामूर्ति पंचमुखी हनुमान। रथ लाल और पीले कपड़े से बने होते हैं। नंदीघोषा में, हरिहर, पांडु नरसिम्हा, गिरिधर, सद्बुद्ध चिंतामणि कृष्ण, चतुर्भुज नारायण, मधुसूदन या विष्णु, लक्ष्मण, पंचमुखी महाबीर सप्तफेन सर्प पर बैठे देवी–देवता हैं।

तालध्वजः तालाध्वज या लंगलध्वज पर बलभद्र के साथ रामकृष्ण बिराजमान करते हैं। कुल 763 लकड़ी के टुकड़ों से बना यह रथ 43 फीट 3 इंच ऊंचा होता है। रथ में 14 पहिए होते हैं।

दधिनौतिः हिरण्मयी।
सारथीः दारूक।

रथ की रस्सीः बासुकी। परंपरागत रूप से, चार काले घोड़े (गोले, शंकु, अंग, बादल) स्थापित किए जाते हैं।

ध्वजः लक्ष्मीनरसिंह। रथ लाल और हरे कपड़े से बने होते हैं। महादेव, बैशीभुज नरसिंह, बलराम, नृत्य गणपति, अंगद, नटंबर (एक बैल पर शिव नाचते हुए), कार्तिकेश्वर, मधुकिटवा के साथ विष्णु की लड़ाई, अनंतवसुदेव ध्वज रथ में सह देवी–देवता हैं।

दर्पदलनः श्रीसुदर्शन सुभद्रा के साथ 'दर्पदलन' या 'पद्मध्वज' या 'देवदलन' रथ में बिराजमान है। लकड़ी के 593 टुकड़ों से बना, रथ 42 फीट 3 इंच ऊंचा है और इसमें 12 पहिए हैं।

सारथीः अर्जुन।
रथ की रस्सीः स्वर्णछुड़ा नगुनी।

झंडाः जयदुर्गा, परंपरागत रूप से, चार लाल घोड़े (रोचिका,मोचिका, जीता, अपराजिता) स्थापित किए जाते हैं। रथ लाल और काले कपड़े से बनाया जाता है। दर्पदलन, बिमला, मंगला, बरही भद्रकाली (सबरुद्धा चतुर्भुजा), बाणदुर्गा, कात्यायनी (अष्टभुजा दुर्गा) हरचंडी, रामचंडी रूप में अब स्थान करती हैं।

जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन तीन रथों में गुंडिचा मंदिर यात्रा करते हैं, गुंडिचा मंदिर को मौसी मां मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। गुंडिचा मंदिर जाने के दिन को ''रथ यात्रा'' या ''गुंडिचा

यात्रा'' कहा जाता है और लौटने के दिन को ''बाहुडा यात्रा'' कहा जाता है। सुदर्शन और सुभद्रा दोनों को हाथों और कंधों के साथ रथों में सवार होते हैं, जबकि जगन्नाथ और बलभद्र को धीरे–धीरे दो प्रमुखों और अन्य दइतापति द्वारा रस्सियों पर खींचा जाता है। भक्त और आगंतुक समान रूप से फूलों के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। श्रीगुंडिचा यात्रा और बाहुडा यात्रा का मुख्य आकर्षण पुरी गजपति महाराजा की तीनों रथों की सेवा है। लाखों भक्त और आम जनता इस प्रक्रिया को देखने के लिए गुंडिचा मंदिर पर इकट्ठा होते हैं। कुछ इतिहासकारों, विद्वानों और शोधकर्ताओं के अनुसार, सूर्य राजा कपिलेंद्र देव के शासनकाल के दौरान छेरा–पंहरा की नीति शुरू की गई थी। रथयात्रा के दिन, गजपति महाराज ये कार्य सम्पादन करते हैं। सभी धर्मों के लाखों भक्त, धर्म की परवाह किए बिना, रथ को रस्सियों से खुशी के साथ खींचते हैं। भक्तों के हरिबोल, जप से पूरा वातावरण आध्यात्मिक वातावरण में परिवर्तित होता है। तालध्वज रथ के बाद, देवी सुभद्रा का रथ और जगन्नाथ का रथ खींचा जाता है। मौसी के घर पर सात दिनों के प्रवास के बाद, भगवान मंदिर में लौटते हैं, जिसे बाहुडा यात्रा कहा जाता है।

भगवान जगन्नाथ की इस रथ यात्रा को देखने के लिए दुनिया भर से लाखों लोग आते हैं। इस रथ यात्रा को अपनी आंखों से देखने का एक अलग तरह का अनुभव है, जगन्नाथ अपने रथ पर बैठे हैं और श्रद्धालु रथ की डोरी खींच रहे हैं। यह कहा जाता है कि अगर आप भाग्यशाली है, तभी जगन्नाथ को रथ पर देखना संभव है।

''''जय जगन्नाथ''''

अंचल कार्यालय, चेन्नै

ज़रा सोचिए....?

सुशील कुमार

वर्तमान में इंसान ने अपने ही अस्तित्व के साथ खिलवाड़ कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर ली है कि उसमें से निकलना लगभग नामुमकिन सा प्रतीत होने लगा है। इंसान ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ इस हद तक कर डाली कि प्रकृति भी मानो अब उसके अस्तित्व को और अधिक सहन कर पाने में अपने आपको असमर्थ पा रही है। इंसानी प्रवृति के अनुरूप इंसान ने अपनी महत्वाकांक्षाओं और विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति की परवाह छोड़ सिर्फ उसका दोहन ही किया है। ग्लोबल वार्मिंग इस छेड़छाड़ का सबसे बड़ा और विस्तृत उदाहरण है, जिसे पृथ्वी पर मानव जीवन के अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा माना जा रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियरों का पिघलना, वायु मण्डल का लगातार प्रदूषित होना, समुद्रों का संतुलन बिगड़ना, जलवायु में लगातार हो रहे परिवर्तनों के दुष्प्रभावों की वजह से आए दिन तूफान, चक्रवात, बारिश, सूखा, कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में अत्याधिक वृद्धि और महामारियों का प्रकोप जैसे खतरे आज इंसानी जीवन पर मंडरा रहे हैं। इंसान द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ की ही एक देन है, कोविड–19 जैसी महामारी। मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षा में ऐसे–ऐसे दुर्लभ प्रजातीय जीवों का शिकार कर रहा है, जिनका पर्यावरण संतुलन में बहुत बड़ा योगदान होता है। लगातार हो रहे इस दोहन से प्रकृति के संतुलन में विकार आया, जिसका परिणाम है कोविड–19 जैसा वायरस।

सभी प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता हमेशा नहीं रहेंगी, क्योंकि ये शाश्वत नहीं हैं। वर्तमान में विकास के नाम पर इन संसाधनों का दोहन बेरोक–टोक निरंतर जारी है। लगातार बढ़ रही जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकताओं और घटते प्राकृतिक संसाधनों की पृष्ठभूमि में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता बहुत अधिक है। लगातार दोहन से आज इन प्राकृतिक संसाधनों के न केवल स्रोत समाप्त हो रहें हैं बल्कि कई प्राकृतिक असंतुलनों के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर सुनामी व भूकंप जैसे कई प्रकार के उलट–फेर भी हो रहे हैं। ज्ञातव्य है जलस्रोतों, जंगल और जमीन जैसे अमूल्य संसाधनों के अपव्यय तथा इनके दुरुपयोग से जो संकट हमारे सामने है, उस पर गंभीरता से विचार करना जरूरी है।

जरा सोचिए ..... क्या मनुष्य जीवन की महत्वाकांक्षाएँ इस हद तक बढ़ गई हैं कि उसने अपने अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। हमारी आने वाली पीढ़ियों को हम भविष्य में क्या देकर जाएंगे सिर्फ प्राकृतिक आपदाएँ, महामारियाँ और जीवन के अस्तित्व की लड़ाई जिससे लड़ने के लिए उनके पास ना तो कोई प्राकृतिक संसाधन होगा और ना ही होगा कोई प्राकृतिक संतुलन।

अंचल बठिंडा

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। – अज्ञात

नराकास उपलब्धियाँ

प्रधान कार्यालय

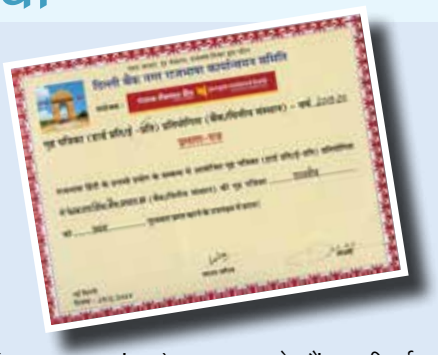

दिल्ली बैंक नराकास की 53वीं बैठक में अध्यक्ष महोदय – श्री राम कुमार (मुख्य महाप्रबंधक) द्वारा हमारे बैंक की ई–पत्रिका "राजदीप" को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री अमित कुमार श्रीवास्तव (उप महाप्रबंधक) तथा श्री देवेन्द्र कुमार (वरिष्ठ प्रबंधक) – पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

कोलकाता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) कोलकाता द्वारा अंचल कार्यालय कोलकाता को "ग" क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

चंडीगढ़

चंड़ीगढ़ बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2019–20 के लिए सुश्री सपना खन्ना को अपने अंचल कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार दिया गया।

बरेली

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली द्वारा 14वीं छःमाही बैठक के दौरान अंचल कार्यालय बरेली को वैजंयती शील्ड प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हिंदी कार्यशाला

अंचल कार्यालय–कोलकाता

अंचल कार्यालय–जयपुर

एस.टी.सी.–रोहिणी

अंचल कार्यालय–गुरूग्राम

अंचल कार्यालय–पटियाला

अंचल कार्यालय–होशियारपुर

जो कला आत्मा को आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती वह कला नहीं है। - महात्मा गाँधी

बैंक के प्रधान कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी – श्री एस. कृष्णन, कार्यकारी निदेशक – श्री अजित कुमार दास, मुख्य सतर्कता अधिकारी – श्री अमरीश कुमार मिश्रा तथा अन्य उच्चाधिकारियों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली।

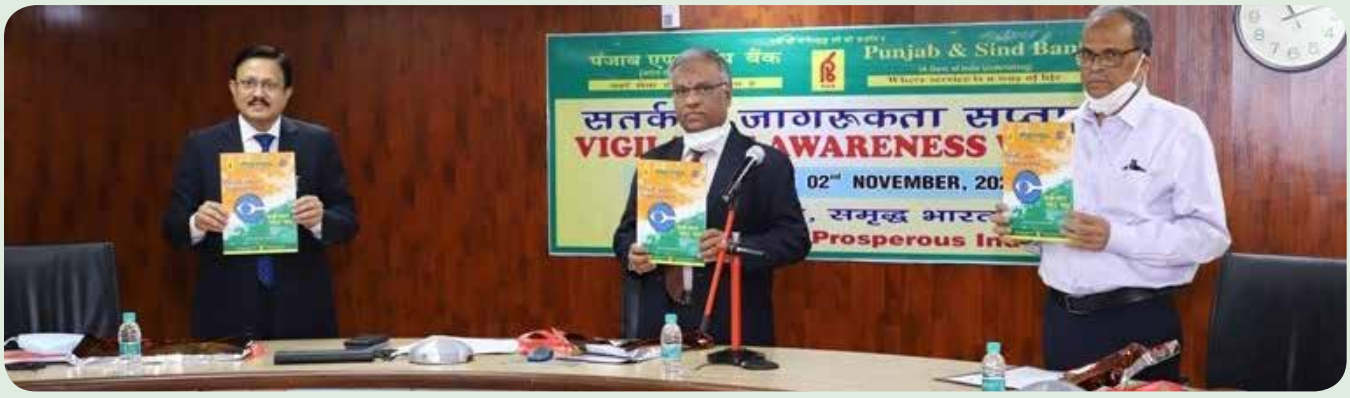

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी – श्री एस. कृष्णन, कार्यकारी निदेशक – श्री अजित कुमार दास, मुख्य सतर्कता अधिकारी – श्री अमरीश कुमार मिश्रा ने सतर्कता विभाग की ई–पत्रिका "विजिल" का विमोचन किया।

दिनांक 29.10.2020 को प्रधान कार्यालय

श्री अमित श्रीवास्तव – उप महाप्रबंधक, डॉ. सुमित जैरथ (आई.ए.एस.) – सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का फूलों से स्वागत करते हुए

डॉ. सुमित जैरथ (आई.ए.एस.)– सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं संदीप आर्य (तकनीकी/कार्यान्वयन/प्रशासन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग – मुख्य अतिथियों का स्वागत करते हुए बैंक के महाप्रबंधक – श्री रवि मेहरा, श्री गोपाल कृष्ण

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी – श्री एस. कृष्णन व मुख्य अतिथि – डॉ. सुमित जैरथ से विचार–विमर्श करते हुए

डॉ. नीरू पाठक – प्रबंधक द्वारा संगोष्ठी का शुभ आरंभ

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी – श्री एस. कृष्णन मुख्य अतिथियों को सम्मानित करते हुए

मानव स्वभाव का ज्ञान ही राजनीति-शिक्षा का आदि और अन्त है। - हेनरी एडम

द्वारा आयोजित राजभाषा संगोष्ठी

मुख्य अतिथि का फूलों से स्वागत

मुख्य अतिथितियों द्वारा संगोष्ठी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मदों पर चर्चा करते हुए

संगोष्ठी में उपस्थित समस्त उच्चाधिकारीगण तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समस्त आँचलिक प्रबंधक व राजभाषा अधिकारी

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुख्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह देते हुए

काव्य–मंजूषा

डर उजाले से

डॉ. कौशलेन्द्र कुमार

मुझे अंधेरों से नहीं
उजालों से डर लगता है
क्योंकि इसमें दिखता है चेहरा
जो वास्तविक नहीं आभासी है
जो अज्ञात और अविश्वास है।
ये चेहरे ज्यों बनावटी मुखौटे है,
सच छुपा, देते जो सिर्फ धोखे हैं।
पल पल रंग बदलते हैं इन चेहरों के
ज्यों बदलते हैं लोग बड़े शहरों के
शायद दिखने, वाला यह चेहरा भी
किसी बड़े शहरी का ही है।
जो ऊपर से चकाचौंध सा है
पर भीतर–भीतर जिसका रंग
अकेलापन और उदासी ही है।

डर इसी बात है, बदलते इन चेहरों में,
कहीं दिख न जाए मेरा चेहरा भी।
इसलिए, मुझे अंधेरे से नहीं
उजालों से डर लगता है।

अंचल कार्यालय, दिल्ली–1

माँ मैं और जीना चाहती हूँ

अंशुमान सिंह

माँ मैं और जीना चाहती हूँ ।
मैं खुलकर सांस लेना चाहती हूँ ।
बड़ी खूबसूरत है तेरी दुनिया,
महसूस की है मैंनें।
पर कुछ अनजाने से शस्त्र मुझ पर वार करते हैं ।
कल तक जो घर था मेरा आज वह अधिकार करते हैं ।
तेरे ख्वाबों को मैं पूरा करना चाहती हूँ ।
माँ मैं और जीना चाहती हूँ ।

माँ मैं तेरा अभिमान बनूंगी ।
बाबा का सम्मान बनूंगी ।
जीजी का साथ,
भाई का दाहिना हाथ बनूंगी ।
माँ इस घर का मैं चिराग बनना चाहती हूँ।
माँ मैं और जीना चाहती हूँ ।

अनखुली पलकों से छलकते मेरे आँसू,
इस बात का गवाह है ।
माँ कोई काटने को आता है,
मेरा दिल सहम सा जाता है ।
पूरी आवाज देकर मैं तुझे बुलाती हूँ ।
माँ मैं और जीना चाहती हूँ ।

अंचल कार्यालय, लुधियाना

जिसकी हम अभिलाषा करते हैं और जिसकी सिद्धि के लिए सम्पूर्ण अन्तरूकरण से प्रयत्न करते हैं, तो उसकी प्राप्ति हमें अवश्य होती है। – स्वेट मार्डन

मैं सिंधू घाटी की सभ्यता हूँ

सुधाकर शुक्ला

मैं सिंधू घाटी की सभ्यता हूँ
मेरा वजूद सिंध से है
मेरा वजूद लव के लाहौर
कुश के कसूर से लेकर
कैथल, रोपड़ तक फैला हुआ है
क्यों मै आज खुद से जुदा हो गया
एक तरफ धर्म निरपेक्ष
एक तरफ, खुदा हो गया
मै कराची, क्वेटा, गुजरांवाला, शेखपुरा, मुल्तान
से लेकर गुजरात, मराठा, द्रविड़ तक
और ओखा से लेकर पूरब का झरोखा हूँ
मैं तक्षशिला, नालंदा, काशी, प्रयाग हूँ
मैं झेलम, मैं रावी, मैं चेनाब हूँ
सतलुज की बहती अजस्र धरा हूँ मैं .....
पर एक साम्राज्य ने मेरे ऊपर कुछ
पुल बनाने के खातिर मेरे पानी को रोक दिया
और हमारे सुन्दर भविष्य को अपनी मौज–मस्ती की लपटों में झोंक दिया...

मेरी सभ्यता! मेरी सभ्यता आज भी है
उसका वजूद आज भी है
मैं वही रावी हूँ जहाँ से पूर्ण स्वराज की ललकार भरी थी
मैं वही मेरठ हूँ जहाँ आजादी की पहली तलवार गढ़ी थी
मैं वही सभ्यता हूँ जहाँ वीरांगनाएँ
देश के खातिर सूली पर चढ़ी थी
मैं वही सभ्यता हूँ जहाँ अशोक महान
चंद्रगुत, पृथ्वीराज, शिवा, राणा, गफ्फार खां
बन गए हैं मिशाल,
जिनके आगे विफल हुई सब चाल
ये भरते हैं रक्त चन्दन मेरे भाल पर
रखा है मेरे गुलिश्तां को इन्होने संभाल कर..

आज गुजरात इधर भी है, उधर भी है
हैदराबाद इधर भी है उधर भी है
पंजाब इधर भी है उधर भी है
इतने वर्षो में बहुत कुछ बदल गया
पर जो नहीं बदला वह है
लक्ष्मी चौक लाहौर और चांदनी चौक दिल्ली
क्या? आज मेरी सभ्यता एक दूसरे की दुश्मन हो गयी है
उत्तर आया ..

हाँ तुम! हाँ तुम!
पता नहीं कौन
जिधर भी नजरें दौड़ाओ
उधर दिखाई पड़ती हैं, सैकड़ों मीटर तारें
जिसमें छिपी भविष्य की तबाही है
बम, गोला, हथियार जिसकी गवाही हैं।
लेकिन मुझे आज भी यकीन है कि
एक दिन!
काशी नालंदा और पश्तो तक हिंदी जरूर पहुंचेगी।

अंचल कार्यालय, पटियाला

बचपन

कल्पना नायक

हंसता–रोता हुआ बचपन
गहरी नींद में सोता हुआ बचपन
घुटनों के बल चलता हुआ बचपन
गिरकर संभलता हुआ बचपन।

रोते हुए स्कूल को जाता हुआ बचपन
मास्टर से मार खाता हुआ बचपन
खिलौने की दुकान को ताकता हुआ बचपन
गाँव के मेले में भटकता हुआ बचपन।

पतंग की डोर में उलझा हुआ बचपन
किताबों की दौड़ में सुलझा हुआ बचपन
प्यार से संवरता हुआ बचपन
खुशकिस्मती बरसता हुआ बचपन।

घर के गुलशन का एक फूल है बचपन
दुनिया के झमेलों से दूर है बचपन
बुरा था या ठीक था बचपन,
मासूमियत, सच्चाई, सुनहरा सा बचपन।

पत्नी – भूतपूर्व महाप्रबंधक श्री जयंत कुमार नायक

डॉ. नीरू पाठक

संत कबीर की ब्रह्म-भावना

हिंदी भक्ति साहित्य के अद्यतन इतिहास में तुलसीदास और सूरदास के अतिरिक्त संत कबीर ही हैं जिनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली एवं महिमामंडित है। निर्गुण भक्ति धारा के प्रबल समर्थक संत कबीर विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि उन्होंने जीवन पर्यंत कागज और कलम का स्पर्श तक नहीं किया था तथापि उनकी कही एक–एक पंक्ति पर अनेक विद्वानों ने शोध किया है। महान हिंदी साहित्यकार डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उचित ही कहा है ''हजार वर्ष के इतिहास में भी कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।'' वस्तुतः उनकी वाणी साधारण नहीं है बल्कि उनकी वाणी में सरल भाषा में गूढ़ अर्थों का समायोजन है।

संत कबीर के जन्म को लेकर भी अनेक भ्रांतियां हैं कुछ लेखकों ने उन्हें हिंदू माना है तो कुछ ने मुसलमान। ऐसा कहा जाता है कि नीरू नाम के एक जुलाहे को वह एक सरोवर के किनारे कमल के फूल में रखे हुए मिले थे। उनकी कोई संतान नहीं थी, इसे उन्होंने ईश्वर का वरदान माना और उसे बड़े लाड प्यार से पाला पोसा। इसलिए शायद जीवन पर्यंत उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के साथ–साथ जुलाहे का पेशा भी अपनाए रखा। उनकी माली हालत कुछ अच्छी नहीं थी। लेकिन वे अपने नाम सिमरन में मस्त गुजारे के लायक ही कमाते थे। जिस प्रकार उनके जन्म को लेकर भ्रांतियां थीं उसी प्रकार अनेक संतों के प्रभाव को भी इनकी विचारधारा में देखा जा सकता है।

संत कबीर के ब्रह्म संबंधी दार्शनिक विचारों के लिए हिंदी साहित्य के मनीषियों ने अलग–अलग राय रखी है कुछ ने तो उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा को पंचमेल खिचड़ी तक कहा है। कुछ ने इसे सधुक्कड़ी भाषा का नाम दिया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में कबीर दास कभी तो अद्वैतवाद की ओर झुकते नजर आते हैं तो कभी एकेश्वरवाद की ओर, वे कभी पौराणिक सगुण भाव से भगवान को पुकारते हैं तो कभी निर्गुण भाव से। उनके अनुसार तो उनका कोई स्थिर तात्विक सिद्धांत ही नहीं था। किंतु ऐसा कदापि नहीं है

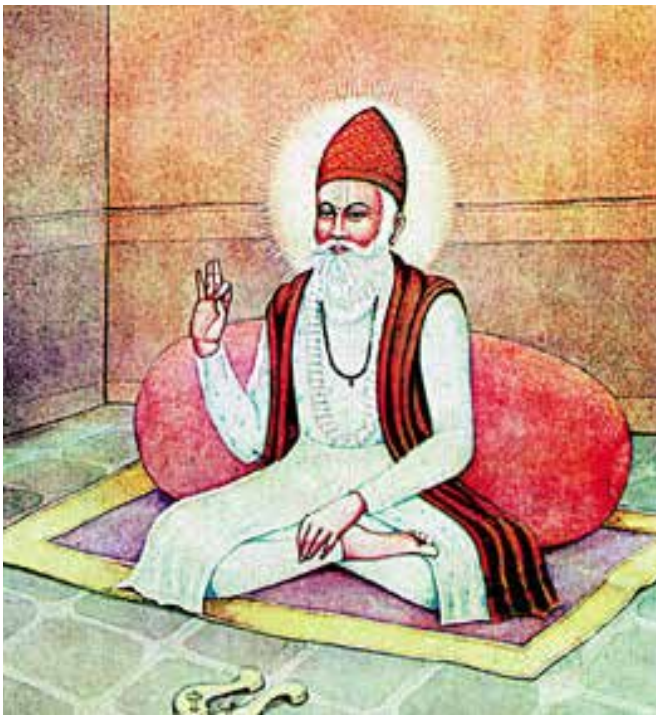

वस्तुतः उन्होंने स्वामी शंकराचार्य, स्वामी रामानंद, बौद्ध मत, सिद्धों, नाथ योगियों और सूफियों के दार्शनिक विचारों को अनुभव के आधार पर अपनी वाणी और दर्शन में प्रतिबिंबित किया है। जिसमें किसी का भी खंडन नहीं है बल्कि मंडन की, समन्वय की वाणी है। जिसमें ब्रह्म तत्व की विवेचना और आत्म साधना का सार संग्रहित है। कबीर जी की प्रतिभा विलक्षण थी, उनकी आध्यात्मिक क्षुधा इतनी अधिक थी कि किसी एक संप्रदाय या वाद तक सीमित ही नही रह सकती थी। इसलिए उन्होंने हिंदू, मुसलमान, वैष्णव, सूफी, योगी प्रभूति आदि सभी साधनाओं को ग्रहण कर अपनी ऐसी विचारधारा को प्रतिपादित किया जिसका कलेवर इतना विस्तृत है, कि यह कहना अधिक सटीक होगा कि राष्ट्र को उस समय जिस समन्वित विचारधारा की आवश्यकता थी, वह कबीर दास जी की वाणी में सतत् प्रवाहित हो रही थी।

संत कबीर के ब्रह्म संबंधी विचारों में सर्वोपरि निर्गुण राम के स्वरूप का विवेचन है। उन्हें "राम" शब्द गुरु मंत्र के रूप में मिला था। कहा जाता है कि एक दिन कबीर गंगा किनारे तड़के सीढियों पर लेट गए थे और जब स्वामी रामानंद जी का उन पर पैर पड़ा तो उनके मुख से अकस्मात राम–राम निकला और कबीर जी ने उसे गुरू मंत्र के रूप में अपनाया। उन्होंने कहा भी है–

निर्गुण राम जपहु रे भाई
अविगत की गति लखी न जाई।।

इसके अनुसार तो उनके राम, दशरथ के पुत्र नहीं बल्कि परम ब्रह्म निर्गुण निराकार अचिंत्य अजन्मे हैं। अपने आराध्य का विस्तृत स्पष्टीकरण करते हुए कबीर कहते हैं कि ना तो उसका रूप है ना रंग है ना देह। वह तो निरंजन है। वेदों के समान नेति प्रणाली अपनाते हुए कबीर कहते हैं –

गोविंद तू निरंजन, तू निरंजन, तू निरंजन राजा
तेरे रूप नहीं, रेख नहीं, मुद्रा नहीं माया।।

समद नाहीं, सिमर नाहीं, धरती नाहीं गणना
रवि ससि दोउ एकै नाहीं, बहत नाही पवना।।

उनकी ब्रह्म भावना का जहाँ तक संबंध है वह पूर्ण रुप से आध्यात्मिक है। वह सूर्य और चंद्रमा की ज्योति से भी परे एक अलौकिक अनिर्वचनीय ज्योति स्वरूप ब्रह्म के नित्य दर्शन करते थे। "अद्वैतवाद" इसी आध्यात्मिक दृष्टि का परिणाम है वेदांती अद्वैतवाद के अनुसार आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। शंकराचार्य जहाँ ''अहम् ब्रह्मास्मि'' कहते हैं वही कबीर कहते हैं:–

जल में कुम्भ, कुम्भ मे जल है, बाहर भीतर पानी
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना, यह तथ कथ्यौ ज्ञानी।।

जल से ओले की उत्पत्ति और ओले का गलकर पुनः जल में मिल जाने के दृष्टांत द्वारा भी उन्होंने ''अद्वैत भाव'' को ही दर्शाया है, जिससे जगतगुरू शंकराचार्य के प्रभाव को उनकी वाणी में स्पष्ट देखा जा सकता है ना कि इस्लाम के एकेश्वरवाद को। अद्वैतवाद के अतिरिक्त उनकी ब्रह्म विवेचना पर सहज योगियों तथा सिद्धों के ''द्वैताद्वैत'' का प्रभाव भी दृष्टव्य है।

बस बिबरजत है रह्या, ना सो स्याम ना सेत

नाथों के ओंकार तत्व तथा दार्शनिक सिद्धांतों से भी उनकी वाणी अंशतः प्रभावित है–

वो ओंकार आदि जो जानै।
लिखि के मेरे ताहि सो मानै।।
वो ओंकार कहै कोई।
जिन्ह यह लखा सो विरले होई।।

नाथ पंथियों की भांति उन्होंने नाद–बिंदु और प्रणव–उपासना का भी वर्णन किया है। ज्योति स्वरूप परमात्मा निराकार है। प्रत्येक जीव के अंतर्मन में ही स्थित है उसे कहीं बाहर ढूंढने नहीं जाना। उस अनंत विस्तार वाले प्रभु में ही कोटि–कोटि ब्रह्मांड समाए हैं। सूफियों के ''नूरवाद'' का प्रभाव भी उनकी वाणी में देखा जा सकता है किंतु उन्होंने स्वयं को कभी सूफी नहीं माना बल्कि प्रभु के प्रेम में सराबोर कबीर की परमात्मा से अंतरंगता अनूठी है। उनके अपने प्रभु से प्रेम की पराकाष्ठा कुछ ऐसी है कि उनकी आत्मा तक प्रेम के रस में भीग गई है और उस प्रेम को वे इस प्रकार प्रकट करते हैं–

कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरसा आय
अन्तरि भीगी आत्मा, हरी भई वनराई।।

तात्विक रूप से कबीर अवतारवाद में आस्था नहीं रखते किंतु वैष्णवों का स्मरण उन्होंने बड़े प्रेम से किया है उनके गुरु रामानंद जी तो ''रामाश्रयी सगुण भक्ति'' के महान प्रवर्तक थे। तभी तो उन्होंने कहा है–

मेरे संग दोउ जनां एक वैस्नों एक राम
वो है दाता मुक्ति का, वो सुमिरावै राम।।

राम नाम का उन पर इतना प्रभाव है कि वह अपने हो राम का कुत्ता कहने में भी परहेज नहीं करते–

कबीर कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाऊँ
गले राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊँ।।

राम से वह निरंतर प्रार्थना करते हैं उनके बिना उनका जीना मुश्किल है और यह तभी संभव है जब राम को सगुण साकार माना जाए–

है कोई ऐसा पर उपकारी, हरिसौ कहे सुनाई रे
अब तो बेहाल कबीर भयो है बिनु देखे जिउ न जाई रे।।

जो उनके राम निर्गुण एवं निराकार हैं तो उन्हें देखना असंभव ही है पर वही निर्गुण ब्रह्म जब अपने भक्तों के लिए भावों के अनुसार यथा–

अजामिल गज गनिका पतित करम कीन्हें
तेऊ उतरि पार गए राम नाम लीन्हें।।

अर्थात उनके राम अजामिल, गज व गनिका को तारने वाले हैं तो वह निश्चित रूप से भगवान विष्णु के अवतार सगुण राम ही हैं परंतु उसके साथ ही उन्होंने नाम सुमिरन पर अधिक जोर दिया है।

वैष्णव संप्रदाय के समर्थन और मांसाहार का विरोध करते हुए संत कबीर कहते हैं –

बकरी पाति खात है ताकि काढ़ी खाल
जो नर बकरी खात हैं तिनका कौन हवाल।।

कबीर की ब्रह्म भावना को एक वाक्य में परिभाषित किया जाए तो उनके निर्गुण राम द्वैताद्वैत विलक्षण रूप से ब्रह्म के प्रतीक हैं उनकी ब्रह्म भावना इस धारणा के पूर्णतया अनुकूल है –

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाई
सार-सार को गहि रहे थोथा देइ उड़ाई।।

उन्होंने अपनी सारग्राही मनोवृत्ति को ब्रह्म भावना में निरूपित कर कबीर वाणी में प्रतिपादित किया। समाज को इतना कुछ देने के उपरांत भी उन्हें अहम की भावना छू भी नहीं गई थी। अपनी श्रेष्ठता को उन्होंने ईश्वर की अनुकंपा ही माना–

नाँ कछु किया नाँ करि सका नाँ करने जोग सरीर
जो कछु किया सो हरि किया ताथैं भया कबीर कबीर।।

वस्तुतः भारत–भूमि अवतारों तथा महान संतों की जन्मभूमि है। संत कबीर भी उनमें से एक हैं जिन्होंने सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार सद्भावना, सदाचार तथा समन्वयवाद की नींव रखते हुए देशकाल व जाति से ऊपर उठकर मानव को दार्शनिक सिद्धांतों के प्रकाश में मानवता के उत्कृष्ट मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। उन्होंने जो भी विचार समाज को दिए उनकी निश्चल, पवित्र तथा निष्कपट भावना को दर्शाते हैं। तभी तो वह कहते हैं–

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।।

उनकी वाणी एक अत्यंत देदीप्यमान उज्ज्वल काव्य है जो हिंदी भाषा का ही नहीं विश्व साहित्य का भी गौरवपूर्ण अंग है।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

बाधाओं से लड़ने की शक्ति देता है 'संघर्ष'

वैभव मिश्र

जीवन में संघर्ष का अधिक महत्व है। वह चाहे किसी भी प्राणी के जीवन से संबंधित हो। संघर्ष से जीवन तराशा जाता है। इस विषय को लेकर मेरी एक प्रिय छोटी सी कहानी जोकि इस लेख के माध्यम से साझा करने का मेरी उत्कंठा हुई। वह यह है, एक बार की बात है तितली का एक बच्चा कुकून (खोल) से बाहर आने के लिए संघर्ष कर रहा था। एक व्यक्ति वहीं पास बैठकर यह देख रहा था। बहुत समय हो गया था और कुकून से बाहर निकलती नन्हीं तितली लगातार प्रयास कर रही थी, उस नन्ही तितली का उस व्यक्ति से उसका कष्ट देखा नहीं गया। उसने बिना देर लगाए झट से एक कैंची निकाली और कुकून के बाकी बचे हिस्से को काट कर तितली को बाहर निकाल दिया। बाहर आई तितली के पंख अभी विकसित भी नहीं हुए थे और उसका शरीर भी सूजा हुआ था। इस पर उस व्यक्ति ने महसूस किया उसने मदद के नाम पर कोई बड़ी गलती तो नहीं कर दी। वह समझ गया कि कुकून से बाहर आने के लिए दरअसल तितली को जिस संघर्ष की जरूरत थी वह नहीं कर सकी। वास्तव में संघर्ष एक अनिवार्य प्रक्रिया हैं जो पूरी नहीं होने के कारण तितली ताउम्र उड़ान नहीं भर सकी। जैसे तितली के विकास के लिए संघर्ष जरूरी है, उसी तरह हमारी शक्तियां भी ऐसे ही दुरूह संघर्ष के दौरान ही विकसित होती हैं। इसलिए बाधाएं और चुनौतियां जरूरी हैं दरअसल, यह संघर्ष एक ऐसा अनुभव है, जिससे हम सब परिचित है। लक्ष्य प्राप्ति या किसी क्षेत्र में कामयाबी इस अनुभव के बिना नहीं मिल सकती। हां, यह कुंजी है जिसमें जिससे खुल सकती है आपकी कामयाबी की राह'। संघर्ष आपको भले ही कड़वा एहसास देता है, परंतु आप इसके कारण खुद पीड़ित महसूस करते हो पर एक समय के बाद आप पाते हैं कि यही आप को तराशता और निखारता है साथ ही आपको संवारता भी है।

संघर्ष आपको ऐसे सांचे गढ़ता है, जो आपको पहचान देता है। आप बीते दिनों के संघर्ष का बखान खुश होकर करते हैं।

अंचल बरेली

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है परंतु एक नया वातावरण देना भी है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

तनय वर्मा

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना

प्रस्तावना

कोविड –19 देशव्यापी लॉकडाउन के बीच, पीएम स्वनिधि स्कीम को आवास व शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के हिस्से के रूप में लॉन्च किया गया था। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना (स्वनिधि) का उद्देश्य उन 50 लाख से अधिक विक्रेताओं को लाभ पहुंचाना था, जिनके पास 24 मार्च को या उससे पहले अपना कारोबार संचालित था। इस योजना की घोषणा वित्त मंत्री ने कोविड–19 महामारी और लॉकडाउन से प्रभावित लोगों के लिए आर्थिक पैकेज के एक भाग के रूप में की थी। ऋण उन विक्रेताओं के लिए किक–स्टार्ट गतिविधि में मदद करने के लिए हैं जो 25 मार्च को लॉकडाउन लागू होने के बाद से बिना किसी आय के छोड़ दिए गए हैं। यह योजना मार्च 2022 तक वैध है।

मूलतः यह एक केंद्रीय योजना है, जिसके माध्यम से हॉकर्स/वेंडर्स को सस्ती कार्यशील पूंजी उपलब्ध करवाना जाना सुनिश्चित किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य कोविड–19 के पश्चात हॉकर्स/वेंडर्स की आजीविका को फिर से सुचारु रूप से गति प्रदान करना था।

स्वनिधि योजना के लाभः

- इस योजना का लाभ सड़क के किनारे रेहड़ी पटरी वालो को प्रदान किया गया।
- स्वनिधि योजना के अंतर्गत शहरी/ग्रामीण क्षेत्रों के आस–पास सड़क पर माल बेचने वाले विक्रेताओं को इसमें लाभार्थी बनाया गया।
- देश के स्ट्रीट वेंडर सीधा 10,000 रुपये तक की कार्यशील पूंजी ऋण दिया गया। जिसे वे एक वर्ष में मासिक किस्तों में चुका सकते हैं।
- इस लोन को समय पर चुकाने वाले स्ट्रीट वेंडर्स को सात फीसदी का वार्षिक ब्याज सब्सिडी के तौर पर उनके अकाउंट में सरकार की ओर से ट्रांसफर किया गया।
- स्वनिधि योजना के तहत जुर्माने का कोई प्रावधान नहीं है।
- यह प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए लोगों की क्षमता को बढ़ाने और कोरोना संकट के समय कारोबार को नए सिरे से खड़ा कर आत्मनिर्भर भारत अभियान को सफल बनाने का काम करेगी।
- लोगों को पीएम स्ट्रीट आत्मनिर्भर निधि योजना की आधिकारिक वेबसाइट (लॉन्च की जाने वाली) पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा या प्रारंभिक कार्यशील पूंजी ऋण प्राप्त करने के लिए बैंकों में ऑफलाइन आवेदन कर सकते हैं।
- इस योजना के तहत आपको खाते में पूरा पैसा तीन बार में आएगा यानी हर तीन महीने पर एक किश्त मिलेगी। यह लोन आपको सात फीसदी ब्याज पर मिलेगा।
- इस लोन में CGTMSE का कवरेज प्रदत्त है ।
- इस ऋण में प्राथमिक सुरक्षा खरीदे गए सामान का हाइपोथिकेशन है।
- हमारे बैंक में इस बैंक का टर्न अराउंड टाइम 2 दिवस का है।
- इस ऋण के लिए सिडबी ने MoHUA से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है ।

स्वनिधि योजना के पात्र लाभार्थी :

- नाई की दुकानें
- जूता गांठने वाले (मोची)
- पान की दूकानें (पनवाड़ी)

- कपड़े धोने की दुकानें (धोबी)
- सब्जियां बेचने वाले
- फल बेचने वाले
- रेडी–टू–ईट स्ट्रीट फूड
- चाय का ठेला या खोखा लगाने वाले
- ब्रेड, पकौड़े व अंडे बेचने वाले
- फेरीवाले जो वस्त्र बेचते हैं
- किताबें/स्टेशनरी लगाने वाले
- कारीगर उत्पाद

लोन देने वाले वित्तीय संस्थान

- अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
- स्मॉल फाइनेंस बैंक
- सहकारी बैंक
- नॉन बैंकिंग फाइनेंस कंपनियां
- माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूंशंस और एसएचजी बैंक

स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना के दस्तावेज (पात्रता)

- आवेदक भारतीय निवासी होना चाहिए।
- इस योजना के तहत देश के केवल छोटे सड़क विक्रेताओं को ही पात्र माना जायेगा।
- आवेदक का आधार कार्ड
- वोटर आईडी कार्ड
- बैंक अकाउंट पासबुक
- मोबाइल नंबर
- पासपोर्ट साइज फोटो

स्वनिधि योजना में आवेदन कैसे करे ?

- सर्वप्रथम आवेदक को योजना की ऑफिसियल वेबसाइट पर जाना होगा।
- इस होम पेज पर आपको Planning to Apply for Loan का ऑप्शन दिखाई देगा। जिसके बाद Planning to Apply for Loan के सेक्शन सभी 3 स्टेप्स को ध्यान से पढ़ कर आगे बढ़ना है और View More के बटन पर क्लिक करना होगा।
- इसके बाद आपके सामने अगला पेज खुल जायेगा। इस पेज पर आपको View / Download Form के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा। जिसके बाद आपके सामने स्वनिधि योजना के फॉर्म की पीडीएफ खुल जायेगा।
- आप इस योजना की पीडीएफ को डाउनलोड कर सकते है। एप्लीकेशन फॉर्म डाउनलोड करने के बाद आपको इस फॉर्म में पूछी गयी सभी जानकारी भरनी होगी। सभी जानकारी भरने के बाद आपको एप्लीकेशन के साथ अपने सभी जरुरी दस्तावेजों को अटैच करना होगा।
- इसके बाद आपके एप्लीकेशन फॉर्म को नीचे बताये गए संस्थानों में जाकर जमा करना होगा।

शहरी स्थानीय निकाय (यू.एल.बी) के द्वारा भी इन प्रसंस्करण किया जाता है, जिसमें यह लोग बैंकिंग मित्र, जनप्रतिनिधियों द्वारा हितग्राहियों का लोन फॉर्म भर कर वेबसाइट पर अपलोड कर देते हैं, जहाँ से वित्तीय संसथान अपने हिसाब से पात्र आवेदनों की छटनी कर ऋण हितग्राहियों से संपर्क स्थापित करते हैं तथा उनको शाखा में बुलवाकर, कागजात निष्पादित करवा कर ऋण राशि की अदाएगी की जाती है।

प्र. का. मानव संसाधन विकास विभाग

हमें इन पर गर्व है

इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित (न्यू सेलेबस) परीक्षा में पिंक सिटी जयपुर से कुमारी हर्षा सोनी, पुत्री श्री बंकट लाल सोनी, सहायक महाप्रबंधक, ऑचलिक कार्यालय दिल्ली–2, ने 35वीं रैंक हासिल की। उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ बहुत–बहुत बधाई।

जिस प्रकार रात्रि का अंधकार केवल सूर्य दूर कर सकता है, उसी प्रकार मनुष्य की विपत्ति को केवल ज्ञान दूर कर सकता है। – नारदभक्ति

विभाष कुमार

व्यवसायिक जीवन में एथिक्स की आवश्यकता क्यों ?

एथिक्स की शिक्षा हमें बचपन से ही परिवार, समाज एवं धर्म ग्रंथों के माध्यम से मिलती रही है। इसके कारण परिवार में, समाज में एवं अपने दैनिक जीवन में किस तरह की एथिक्ल होनी चाहिए, यह हम निरंतर सीखते रहे है। परंतु व्यवसायिक जीवन में एथिक्स का अर्थ इस प्रकार है कि हम अपनी संस्था अर्थात बैंक में किस प्रकार का व्यवहार, आचरण करें जो हमारी संस्था के मानक के हिसाब से उचित एवं आदर्श हो। इस दृष्टि से हमें अनिवार्य रूप से अपने बैंक द्वारा जारी एथिक्ल कोड पता होनी चाहिए।

उपरोक्त बातों से स्पष्ट हो जाता है कि एथिक्स का विषय काफी व्यापक है। नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र में दिए गए एथिक्स भेद–विभेद से इतर बैंकों में एथिक्स को देखते हुए, उसका अनुपालन किस तरह से हम कर सकते है इसका विश्लेषण यहाँ करेंगे।

बैंक के एथिक्ल कोड, एथिक्ल सिद्धांत का विश्लेषण हम इन प्रमुख बिन्दुओं मूल्य, अभिवृति, कर्त्तव्य, सोशल मीडिया का प्रयोग एवं भ्रष्टाचार की परिधि में रहते हुए करने का प्रयास इस लेख में कर रहे है।

एथिक्ल कोड – हमें हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए की बैंक हित हमारे लिए सर्वोपरि है। उनके निमय एवं विधान का सम्मान करते हुए उसका अनुसरण भी हम दैनिक रूप से करते है। अपने दैनिक कार्यकलापों में व्यवसायिकता का परिचय देते हुए उच्च पारदर्शिता के साथ बैंक से संबंधी सूचना, संसाधन की रक्षा करना हमारी पहली प्राथमिकता होगी।

एथिक्ल कोड, एथिक्ल सिद्धांत कुछ शब्दों में इसे परिभाषित करें तो हम कह सकते है कि सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा, कार्यों में पारदर्शिता, नियमबद्धता, स्थितरता, ग्राहक एवं बैंक बिजनस को गोपनीय रखना एवं संगठनात्मक हित इसके मूल मंत्र है।

जैसा कि हमें ज्ञात है कि मूल्य एक शाश्वत चीज है। जो मनुष्य

को मनुष्यता नैतिकता, सहिष्णुता, ईमानदारी, आत्मसम्मान से जुड़ा होता है। समय पर ऑफिस आना, अपने दिए कार्यों का पूरी क्षमता के साथ ईमानदारी से निष्पादन करना यह हमारे कर्त्तव्य के साथ हमारे मूल्यों से भी जुड़े विषय है।

मूल्य – शब्द का प्रयोग किसी वस्तु का गुण और व्यक्ति की मानसिक अवस्था के लिए किया जाता है। किसी वस्तु का ऐसा गुण या किसी व्यक्ति की ऐसी मानसिक अवस्था जिसको इस मानव जीवन और स्वास्थ्य के लिए अच्छा मानते है और जिसकी इच्छा करते है उसे मूल्य कहते है। उदाहरण–सच्चाई और ईमानदारी, न्याय और करुणा, परोपकारिता मूल्य है, क्योंकि यह व्यक्ति की वह मानसिक अवस्था है जिसको हम अच्छा मानते हुए इसकी इच्छा भी रखते है। मूल्य तर्क एवं संकल्प दोनों से भिन्न होते है। मूल्यों की आवश्यकता व्यक्तियों के बारे में निर्णय/मूल्यांकन के लिए होता है।

मूल्यों का अनुसरण करते हुए हमें वस्तुनिष्ठता (Objectivity) के साथ चलना होता है। 'जहां सेवा ही जीवन ध्येय है' के सूक्त वाक्य के साथ चलते रहने के उपरांत हमें अपने ग्राहकों की सेवा हेतु वस्तुनिष्ठता अर्थात बैंक के नियमों के साथ–साथ ही चलना होगा। उदाहरण हेतु हम सभी जरूरतमंद ग्राहकों में से सिर्फ उन्हीं ग्राहकों को ऋण दे सकते है, जो बैंक नियम के अनुसार पात्र होता है। बैंक हित को नजरंदाज करते हुए सभी जरूरतमंद ग्राहकों को ऋण

देना नियमों की आवेलहना है। बैंक हित को जाने अनजाने नुकसान पहुंचना हमारे बैंक एथिक्ल के विरुद्ध माना जाएगा।

मानक– कार्य करने की विशेष दिशानिर्देशों को मानक कहते है। मानकों को औपचारिक आदेशों के द्वारा लागू किया जाता है। उन मनको के हिसाब से हमें अपने कार्यों का निष्पादन करना होता है।

प्रशासनिक मूल्य– निःस्वार्थ निष्ठता – किसी संगठन में आसीन व्यक्ति को जनहित से संबंधित निर्णयों को अपने हितों/परिवार/संबधियों को ध्यान में रखकर नहीं लेना चाहिए। ईमानदारी व सत्यनिष्ठा किसी भी व्यक्ति को जो सार्वजनिक वित्तीय पद पर आसीन है, उसमें अनिवार्य रूप से होना आवश्यक है।

अभिवृति–रुझान–व्यक्ति की सोच–विचार, पसंद–नापसंद और व्यवहार के मेल को अभिवृत्ति कहते है। अपने आसपास की दुनिया का सामाजिक मूल्यांकन भी अभिवृति कहा जाता है। वास्तव में अभिवृति मनुष्य के भीतर का वह दृष्टिकोण है जिसमें भावना एवं क्रिया का पक्ष भी शामिल होता है।

इसे शाखा प्रबंधकों तक सीमित करना हमारी चूक होगी। बैंक में सभी अधिकारी/कर्मचारी में नेतृत्व क्षमता होनी चाहिए। प्रत्येक स्टाफ अपने में लीडर है।

सकारात्मक अभिवृति– दिमाग की यह दशा रचनात्मक सोच के लिए अनुकूल है– यह जोखिम का आकलन करने को प्रोत्साहित करती है, यह नवाचार के लिए आवश्यक है। इसलिए यह सभी स्टाफ सदस्यों पर लागू होती है।

– चीजों को करने और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रेरणा और ऊर्जा प्रदान करती है।

– अवसर को देखना और पहचाना इसके मूल में होता है।

– केवल समस्याओं के बारे में बताने के बजाए, समाधान की तलाश, खुश होना, संतुष्ठ होना

– सफलता की आशा जगाकर और प्रेरणा प्रदान करना इसका मूल उद्देश्य होता है इसलिए हमें अपने व्यवसायिक जीवन में इस तरह की अभिवृतिओं को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

नकारात्मक अभिवृतियां हमें निम्नलिखित अभिवृतिओं से बचने की आवश्यकता है।

1) तटस्थ 2) उपेक्षा 3) उदासीन 4) पृथकता (Detachment) 5) भावहीनता 6) संतुलित–balanced

इस तरह की अभिवृतियां संस्था के विकास में बाधक होती है। इसलिए सभी स्टाफ सदस्यों को इन नकारात्मक अभिवृतिओं से दूर रहने की आवश्यकता है।

अभिक्षमता (Aptitude)– ज्ञान, कौशल, प्रतिक्रिया अभिक्षमता के मूल घटक है।

अभिक्षमता का संबंध व्यक्ति की बौद्धिक स्तर की भिन्नता से नहीं है, इसका संबंध व्यक्तियों की भिन्न–भिन्न योग्यता से है। अभिक्षमता व्यक्ति की उन विशेषताओं का मिश्रण है, जो व्यक्ति की विशिष्ट ज्ञान, कौशल अथवा संगठित प्रतिक्रियाओं को प्रशिक्षण से अर्जित करने की क्षमता होती है। जैसे– किसी भाषा को बोलना, फिनेकल ऑपरेट करना, गाड़ी चलाना, प्रशासन चलाना अभिक्षमता का उदाहरण है।

किसी अभिक्षमता को अर्जित करने हेतु दो बातों की आवश्यकता होती है–1) अनुकूल अवसर 2) प्रशिक्षण

इसलिए हम कह सकते है कि बैंक के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अनुकूल अवसर एवं प्रशिक्षण देकर उसमें अभिक्षमता का विकास कर सकते है।

कर्त्तव्य– ऐसे कर्म या एक्ट जो किसी विशेष नियम अथवा आदर्श के अनुरूप होते है और जिसमें एक बाध्यता निहित होती है, उन्हें कर्त्तव्य कहते है। जर्मन विचारक कांट ने अपनी पुस्तक Groundwork of the metaphysics of moral में कर्त्तव्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि नियम के प्रति सम्मान की भावना से प्रेरित होकर उसी नैतिक नियम के अनुसार कर्म करने की अनिवार्यता कर्त्तव्य है।

बैंक में कर्त्तव्यों का विशेष महत्व है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर देख सकते है।

1 नियम के अनुसार कार्य करने की बाध्यता होती है।
2. गोपनीयता और निजता का संरक्षण।

जिस व्यक्ति के हृदय में संगीत का स्पंदन नहीं है वह व्यक्ति कर्म और चिंतन द्वारा कभी महान नहीं बन सकता। – सुभाष चन्द्र बोस

3. सभी को सम्मान देना और निष्पक्ष व्यवहार करना।
4. किसी के शोषण एवं दुराचार का संपूर्ण निषेध।
5. कर्त्तव्य नहीं करने पर निंदा या आलोचना की जाती है।

कार्यस्थल आचरण– (Conduct) मनुष्यों के कर्मो से उसका आचरण निर्मित होता है। आचरण का मूल्यांकन उचित या अनुचित शब्द से किया जाता है। कार्यस्थल पर सामाजिक नियम, कायदे के अनुसार स्टाफ सदस्यों का व्यवहार रहेगा। साथ ही बैंक स्टाफ सदस्यों के आचरण हेतु बनाए हुए विधान भी लागू होंगे। हमें उनका अनुपालन करना होता है।

मीडिया, सोशल मीडिया का प्रयोग करते समय बैंक को संबंध करते हुए कोई राय और मत प्रस्तुत न करें, जब तक आप इसके लिए अधिकृत न हो या इस संबंध में पूर्व में अनुमति नहीं ली हो।

भ्रष्टाचार : – प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से किसी अधिकारी/कर्मचारी द्वारा बैंक सुविधाएं, व्यवस्था का दोहन करते हुए अपने लिए विशेष लाभ अर्जित करना भ्रष्टाचार के अंतर्गत कृत्य माना जाएगा। एथिक्ल सिद्धांत के पहले बिंदु में हमें कनफ्लिकट ऑफ इंटरेस्ट से बचने की सलाह दी जाती है। इस तरह के अपरोक्ष किस्म के भ्रष्टाचार आदि से भी बचना है हमें। सूक्त रूप में कहें तो अपने जीवनदायनी संस्था के हित और गरिमा का संरक्षण करेंगे तो उसी से हमारा हित संरक्षित होगा। इस भावना के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ देते हुए बैंक के प्रति अपना पूर्ण समर्पण बनाए रखिए।

नोट– बैंक के ऐथिकल कोड से संबंधित अधिक जानकारी हेतु मा.सं.वि.विभाग के परिपत्र 3120 दिनांक 13.08.2020 अवश्य देखें।

एस.टी.सी. रोहिणी

कार्टून कॉर्नर

पीयूष कुमार, अंचल लखनऊ

प्रधान एवं अंचल कार्यालयों द्वारा आयोजित सिख धर्म के संस्थापक

युवकों की शिक्षा पर ही राज्य आधारित है। – अरस्तू

श्री गुरू नानक देव जी के 551वें प्रकाश पर्व की झलकियाँ

ग्राहक के मुख से

स. हरकंवर पाल सिंह लाम्बा ने की बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना

स. हरकंवर पाल सिंह लाम्बा
मैनेजिंग पार्टर
वैम्बले पेन्ट्स एंड कैमिकल्स

पंजाब एण्ड सिंध बैंक देश के सर्वश्रेष्ठ बैंकों में से एक है, जिसकी स्थापना वर्ष 1908 में भाई वीर सिंह, स. सुन्दर सिंह मजीठिया एवं स. त्रिलोचन सिंह जैसे दूरदर्शी तथा विद्वान व्यक्तियों के मन में देश के गरीब से गरीब व्यक्ति का जीवन स्तर उठाने के उद्देश्य को लेकर की गई थी। वैम्बले पेंट्स एंड कैमिकल्स के मैनेजिंग पार्टनर स. हरकंवर पाल सिंह लाम्बा पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक की सेवाओं के विषय में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमने अपना पहला सेविंग बैंक अकाउंट वर्ष 1966 में पंजाब एण्ड सिंध बैंक में खोला था। उसके बाद 1977 में वैम्बले प्लास्टिक मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी का गठन किया गया, उसके बिजनेस का करन्ट अकाउंट भी हमने इसी बैंक में खोला। उस समय स. एस.एस. कोहली जी ब्रान्च के लोन मैनेजर थे जो बाद में बैंक के चेयरमैन मनोनीत हुए। तत्पश्चात हमारे अकाउंट्स मल्कागंज ब्रान्च में शुरू किए गए। वर्तमान समय में वैम्बले पेन्ट्स एंड कैमिकल्स के सभी अकाउंट्स रणजीत नगर, कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, दिल्ली की ब्रान्च में संचालित हैं। आज हमारी कम्पनी एवं पंजाब एण्ड सिंध बैंक के बीच लगभग 55 साल से अटूट रिश्ता बना हुआ है जो भविष्य में और भी मजबूत होगा। मेरे अनुभव के अनुसार पंजाब एण्ड सिंध बैंक की सेवाएं तारीफ के काबिल हैं। बैंकिंग सेवा का अहम मन्त्र होता है ग्राहक सेवा, इसी उद्देश्य को लेकर पंजाब एण्ड सिंध बैंक अपनी कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरा है। जब भी बैंकिंग सम्बन्धी किसी भी समस्या के लिए हम ब्रान्च में गए हमारी समस्या का वहीं समाधान कर दिया गया। यही ग्राहक अपने बैंक से उम्मीद करता है। आज तक जितने भी बैंक मैनेजर इस ब्रान्च में आए सभी ने पूर्णतया सहयोग दिया। यहां तक कि कुछ समस्याओं का समाधान तो बैंक स्टाफ ने टेलीफोन पर ही कर दिया।

मैं स. हरकवंर पाल सिंह लाम्बा सभी को विश्वास दिलाता हूं कि बैंकिंग सेवाओं के लिए पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखाओं से जुड़कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करें। मैं पिछले 54 वर्षों से पंजाब एण्ड सिंध बैंक की सेवाओं का कायल हूँ इसलिए सभी शाखाओं के ब्रान्च मैनेजर, स्टाफ एवं अन्य सदस्यों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने के साथ-साथ बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है। - जॉन जी. हिबन

आरती सिंह

खुदरा बैंकिंग में हिंदी का योगदान

खुदरा बैंकिंग से पहले बैंकिंग को जानना जरूर है, बैंकिंग आज के इस आधुनिक युग में उभरता हुआ सेवा क्षेत्र है। इसकी जाल संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोये हुए है। जैसे–2 मानवय आवश्यकताओं में वृद्धि होती चली जा रही है, वैसे–2 बैंकिंग क्षेत्र का विकास तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। बैंकिंग से अभिप्राय ग्राहकों से जमा स्वीकार करना तथा ऋण देना। इसके अतिरिक्त ग्राहक की माँग के अनुसार चैक, ड्राफ्ट, पे ऑर्डर, आदि के माध्यम से भुगतान करना, इसके अलावा बिलो का भुगतान, बिलों का बट्टा, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, मोबाईल बैंकिंग, ऑन लाईन, बैंकिंग शेयर आदि खरीदने बेचने में ग्राहक की सहायता करना, गोल्ड लोन, कार लोन, व्यक्तिगत ऋण, ग्रह ऋण, बीमा करना, म्यूच्यूअल फंड्स, आर.टी.जी.एस., एन.ई.एफ.टी. के माध्यम से पैसा ट्रान्सफर करना, सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं जैसे मुद्रा लोन, सुकन्या योजना, धन–जन योजना, सुरक्षा बीमा योजना, पैंशन धारकों के लिए लोन की योजना, अटल पैंशन योजना, फसल बीमा योजना, किसान कार्ड योजना, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के लिए चलाई जाने वाली योजना, महिला और बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली योजनाएं, सस्ते तथा किफायती दरो पर स्वयं सहायता समूह और गरीबों को ऋण की योजना आदि की जानकारी देना और क्रियान्वित करना।

खुदरा बैंकिंग का आज के बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है, खुदरा बैंकिंग का अपना एक विशेष स्थान है, खुदरा बैंकिंग से अभिप्राय व्यक्तियों, परिवारो, व्यवसायियों को दी जाने वाली सेवाएँ (बचत जमा, जमा ऋण, साविधी जमा, क्रेडिट कार्ड, गृह ऋण, व्यक्तिगत ऋण और बहुत सारी सेवाएँ है। जो कम ब्याज और किफायती दरो पर, कम रिस्क पर उपलब्ध करवाई जाती है।) मास्लो जो एक मनौवैज्ञानिक ये उन्होनें कहाँ था जैसे–2 मानव की आवश्यकता बढ़ती जाती है। उसकी अपेक्षाएं बढ़ती जाती है। बैंक उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे सेवाएँ प्रदान करता है। बैंक ग्राहकों की आवश्यकतानुसार उस बैंकिंग उत्पादों की

जानकारी उपलब्ध करवाता है और उसे सुरक्षित स्तर पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करता है। वैसे तो बैंक खुदरा बैंकिंग के अतिरिक्त थोक बैंकिंग, कॉरपोरेट बैंकिंग, पैरा बैंकिंग, यूनिवर्सल बैंकिंग आदि बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाता है। पर पिछले कुछ समय में लगातार बढ़ते हुए एन.पी.ए. के कारण खुदरा बैंकिंग की माँग में बढोत्तरी हुई है, खुदरा बैंकिंग ने कम लागत और कम रिस्क रहता है, संपूर्ण विश्व में खुदरा बैंकिंग का क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है। बैंक ऑफ अमेरिका ने 38 मिलियन ग्राहकों को खुदरा बैंकिंग से जोड़ा है तथा सेवाएं प्रदान की है भारत की कुल आबादी 132.42 करोड़ है। कुल आबादी की 90% से अधिक जनसंख्या आज इस क्षेत्र से जुड़ी हुई है। खुदरा बैंकिंग के विशालकाय जाल ने सभी लोगों को जोड़ने का प्रयास किया है। गरीब और मध्यम परिवार के लोगों का इसमें अधिक प्रतिशत है। बैंकिंग उत्पादों का प्रयोग कर लोगों के जीवन स्तर में परिवर्तन हुआ और इससे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि हुई है, इससे भारतीय अर्थव्यवस्था भी मजबूत हुई है।

हिंदी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, इसकी लिपि देवनागरी है, प्रयोग के आधार पर इसे क,

ख, ग आदि क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, 60% से अधिक जनसंख्या द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है। यह सरल और रोचक भाषा है। भारत में 22 भाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी अधिक से अधिक लोगों के द्वारा समझी और बोली जाने वाली भाषा है, भाषा संवाद का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज कोई भी क्षेत्र चाहे वह निर्माण क्षेत्र हो, सेवा क्षेत्र हो कोई भी इससे अछूता नहीं रहा है। समाज, देश ओर विश्व के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। किसी भी देश की, समाज की संस्कृति, आचरण, व्यवहार, विकास आदि का ज्ञान उसकी भाषा के आधार पर ही होता है, भाषा संवाद का बहुत बड़ा माध्यम है। संपूर्ण विश्व को जोड़ने, विकास करने और एक सूत्र में पिरोये रखने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बिना भाषा के मानव जीवन की कल्पना करना अपने आप में हैरानी का विषय है, बैंकिंग क्षेत्र में संवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। बेहतर संवाद के लिए भाषा का ज्ञान हो, अगर आप किसी ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसका ज्ञान ग्राहक को नहीं है तो आपका उत्पाद कितना भी अच्छा हो आप उसे पूरी तरह उस उत्पाद को लेने के लिए प्रेरित नहीं कर पायेंगे। ग्राहक की उत्पाद के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए, प्रेरित करने के लिए जानने की जिज्ञासा पैदा करने के लिए, उत्पाद खरीदने हेतु प्रेरित करने के लिए, कुशल संप्रेषण के लिए, ग्राहक की भाषा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। हिंदी भाषा अधिक व्यक्तियों के द्वारा बोली ओर समझी जाती है, गैर–हिंदी भाषी क्षेत्र में भी हिंदी को आसानी से समझा जा सकता है। हिंदी सरल और रोचक भाषा है। इसलिए इसका प्रयोग आसानी से किया जा सकता है। खुदरा बैंकिंग जो बैंकिंग क्षेत्र का उभरता हुआ क्षेत्र है, हिंदी भाषा का इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। भारत सरकार द्वारा हिंदी के विकास के लिए समय–समय पर महत्वपूर्ण निर्देश दिए जाते हैं। सरकारी विभागों में हिंदी भाषा नीति के अनुसार पत्र व्यवहार हिंदी और अंग्रेज़ी दोंनो भाषाओं में किया जाएगा। सरकारी पत्रों या निर्देशों का जवाब अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों में भाषाओं में दिया जाएगा। कोई भी आफिस आर्डर या सर्कुलर दोंनो भाषा में प्रेषित किए जायेंगे। हिंदी का प्रयोग वांछनीय है। खुदरा बैंकिंग में जहाँ छोटे–छोटे उत्पादों (जमापत्र, ऋण, क्रेडिट कार्ड, आदि) बहुत से उत्पादों की जानकारी देने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। सरकारी निर्देशों के अनुसार किसी भी उत्पाद के प्रचार में चाहे वह ऑनलाइन हो या बैरन लगाकर, पैम्पलेट छपाकर, कैम्प लगाकर आदि में हिंदी भाषा का प्रयोग करने अनिवार्य है। कोई भी बैनर चाहे वह किसी भी क्षेत्र में लगा हो, गैर हिंदी भाषी क्षेत्र में भी उसमें हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है। हिंदी, अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाएगा। भारत सरकार के हिंदी मंत्रालय द्वारा समय–समय पर जाँच की जाती है कि सरकारी निर्देशों का ठीक से प्रयोग हो रहा है कि नहीं।

खुदरा बैंकिंग में उत्पादों की बिक्री में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जो ग्राहक अंग्रेजी भाषा का कम ज्ञान रखते है या ज्ञान नहीं रखते हैं वह हिंदी भाषा के माध्यम से उत्पादों की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। मान लिजिए उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव जहाँ गेहूँ की अधिक पैदावार होती है तो बैंक अपने खुदरा उत्पाद जैसे सुक्ष्म, लघु, मध्यम के अन्तर्गत फसल ऋण और फसल बीमा किसान क्रेडिट कार्ड आदि उत्पादों को आसानी से प्रेषित कर सकती है। मान लिजिए उस शाखा में एक बैंक अधिकारी को जो मूल रूप से गैर हिंदी भाषीय क्षेत्र हो और उसे हिंदी भाषा का ज्ञान नहीं है और एक अधिकारी है जो गैर हिंदी भाषा का होते हुए भी हिंदी भाषा का ज्ञाना रखता है। अगर दोनों अधिकारी गाँव में जाकर अपने उत्पादों की जानकारी किसानों को देते हैं और उन्हें अपनी पैदावार और बढ़ाने के लिए सस्ते और किफायती दरों पर फसल ऋण और खेती के लिए प्रयोग होने वाले उपकरण जैसे ट्रैक्टर, मशीने आदि के लिए ऋण, किसान क्रेडिट कार्ड फसल बीमा या कोई ऐसी सरकारी योजना जिससे किसानों को लाभ हो आदि की जानकारी देनी हो। इसके लिए एक बेहतर संवाद और हिंदी भाषा के ज्ञान की आवश्यकता होगी। यह कार्य वह अधिकारी कर पायेगा जो अपनी बात आसानी से रोचक तरीके से, किसानों में उत्पाद के प्रति जिज्ञासा पैदाकर उसे उत्पाद लेने के लिए प्रेरित और उत्सुक कर सके। ऐसा तभी संभव हो पायेगा जब उसे हिंदी भाषा का ज्ञान हो, इसलिए हिंदी भाषा का खुदरा बैंकिंग में महत्वपूर्ण योगदान है। शहरों में भी जब लोगों को कार लोन, गृह ऋण, गोल्ड लोन व्यक्तिगत लोन, सरकारी शेयर और जमा प्रमाण पत्र, सरकारी योजनाएं (सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री जन धन योजना, अटल पेंशन योजना, सुरक्षा बीमा योजना आदि) की जानकारी देने के लिए अपने उत्पाद की बिक्री के लिए बेहतर संप्रेषण के लिए भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। हिंदी में संवाद तभी संभव है, जब बैंक अधिकारियों को उसका ज्ञान होगा और उसकी महत्वता का ज्ञान होगा। शहरों में भी एक बहुत बड़ी जनसंख्या द्वारा हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। आज के इस आधुनिक युग में जहाँ कंप्यूटर का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है। इंटरनेट ने तो सारे विश्व को एक साथ जोड़ दिया है। किसी भी विषय की जानकारी, किसी भी क्षेत्र की जानकारी किसी विशेष उत्पाद, सेवा की जानकारी खुदरा बैंकिंग से संबंधित उत्पादों की जानकारी सभी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। खुदरा बैंकिंग के उत्पादों पेटीएम, डेबिट कार्ड, ऑनलाइन पेमेंट के लिए भीम ऐप,

इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई, ऋण लेने के लिए क्या ब्याज दर है, बैंक की रेटिंग क्या है, सभी की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। किसी भी भाषा में आप इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यूनीकोड की सहायता से आप अपना कार्य हिंदी भाषा या अन्य भाषाओं में आसानी से कर सकते है तथा अपने उत्पाद का विज्ञापन किसी भी भाषा में कर सकते हैं। अधिकांश व्यक्तियों द्वारा हिंदी के प्रयोग के कारण सारी सुविधाएं अब हिंदी में उपलब्ध है। खुदरा बैंकिंग से संबंधित किसी भी उत्पाद की जानकारी आपको आसानी से हिंदी में उपलब्ध हो जाएगी।

ऐसे ग्राहक जो कंप्यूटर का कम प्रयोग करते हैं या ऑनलाइन बैंकिंग सुविधाओं का कम इस्तेमाल करते हैं। वह भी हिंदी के प्रयोग के कारण खुदरा बैंकिंग के विभिन्न उत्पादों का लाभ उठा सकते हैं। अब बैंकिंग क्षेत्र में पासबुक में भी हिंदी का प्रयोग किया जाता है। पासबुक को आसानी से हिंदी में प्रिंट किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के फार्म जैसे चैकबुक फार्म, बचत या चालू खाता फार्म, एफ.डी. फार्म, आरटीजीएस, एनईएफटी फार्म विभिन्न प्रकार के ऋण (गृह ऋण, कार ऋण, व्यक्तिगत ऋण) आदि के फार्म, एटीएम फार्म, आदि दोनों भाषाओं हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध है।

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग होने के कारण खुदरा बैंकिंग के उत्पादों की बिक्री में वृद्धि हुई है और एनपीए खातों में काफी कमी आई है। इससे बैंकिंग शाखाओं में वृद्धि हुई ओर अधिक से अधिक लोग बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े हैं जिससे लोगों के जीवन स्तर में परिवर्तन आया है। लोगों के विकास में समाज का विकास और समाज के विकास में देश का विकास हुआ है और जब देश का विकास होता है तो संपूर्ण विश्व का विकास होता है। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग के कारण सभी लोगों को चाहे, वह गरीब हो, अमीर हो, शिक्षित हो, अशिक्षित हो सभी को बैंकिंग क्षेत्र से जोड़ा है। हिंदी के प्रयोग के कारण खुदरा बैंकिंग के साथ–साथ संपूर्ण बैंकिंग क्षेत्र का विकास हुआ है।

शाखा अट्टा सैक्टर–18, नोएडा

श्री अश्वनी कुमार

छोटी–छोटी बातों की है अहमियत बड़ी

प्रतिदिन हम जो कुछ करते हैं, उन छोटी छोटी बातों या आदतों पर हमारी नजर कम पड़ती है। उन पर ध्यान दें, उन्हें बेहतर बनाने का प्रयास करें तो आप पाएंगे कि इन्हीं अनदेखी आदतों के कारण अब जिंदगी में बदलाव शुरू हो गया है :–

- यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो संभव है उसका विरोध हो। आपको इससे पीड़ा हो, पर यही पीड़ा आप को मजबूती से आगे बढ़ने में मदद करेगी।
- यदि बेहतर कल के लिए आपको अपनी आरामदायक जिंदगी को आज न कहना पड़े, मुश्किलें उठानी पड़े, तो इसके लिए सहर्ष तैयार रहें।
- प्रतिक्रियावादी न बने। कुछ बुरा लगने पर एकदम से जवाब ना दें आपको ठहराना है और सोचना है कि क्या सही है और किस तरह का जवाब देना बेहतर होगा
- आप मशीन नहीं है पर शरीर कुछ संकेत जरूर देता है। शरीर की बुनियादी मांगे पूरी करें। उसकी देखभाल करें। अनदेखा करने का अर्थ हुआ कि आप अपने जीवन के प्रति सजग नहीं और अंततः अपने कर्तव्य के प्रति भी नहीं है।
- आत्मविकास आपकी बाहरी सफलता या प्रगति से सीधे जुड़ा है। किताब पढ़ने का समय नहीं होने पर आप अपनी दिनचर्या में कुछ नया पढ़ने–सीखने को अवश्य शामिल करें।
- अपनी किसी बुरी आदत को देखकर उस पर सोचने या परेशान होने के बजाय आपको यह देखना है कब आप अधिक प्रेरित होते हैं और कब कुंठित हो जाते हैं। इसका आकलन करने के बाद खुद को तीसरा पक्ष मानकर अपने को संतुलित सलाह देते रहें।
- आप जो काम करना चाहते हैं, उन्हें एक जगह एकत्रित करें। उनकी सूची बनाएं।
- अतिआवश्यक यानी बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण कामों को पहचाने।
- आपके काम का मूल्य, उसका महत्व क्या है, यह भी देंखे।
- कौन सा काम पहले करना है और कौन सा बाद में, उन्हें क्रमानुसार सजा लें।

अंचल बरेली

पूजा अग्रवाल

अवसंरचना के निर्माण में वित्तीय संस्थानों एवं बैंकों की भूमिका

वित्तीय संस्थाओं का मुख्य कार्य अपने ग्राहकों एवं सदस्यों को वित्तीय सेवाएँ (जैसे ग्राहक का धन जमा रखना, ग्राहक को ऋण देना, बैंक ड्राफ्ट देना, निधि अन्तरण आदि) प्रदान करना हैं। किसी भी देश की प्रगति में वित्तीय संस्थानों की अहम भूमिका होती है। वित्तीय संस्थान बैंकिंग, इंश्योरैंस, म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार, गृह ऋण, दूसरे अन्य ऋण, क्रेडिट कार्ड के क्षेत्रों में काम करते हैं। वित्तीय संस्थानों का मुख्य कार्य देश में मुद्रा के प्रवाह को नियंत्रित करना होता है। उद्योग–धन्धों को चलाने में पूंजी की जरूरत होती है। ये उन्हें वित्तीय संस्थान प्रदान करते हैं। उद्योग, जनता को रोजगार उपलब्ध कराते हैं। वित्तीय संस्थानों की मदद से आम लोग उद्योगों में अपनी पूंजी लगा के एक तरफ मुनाफा कमाते हैं तो दूसरी तरफ देश के विकास में योगदान देते हैं।

ये संस्थान लोगों को उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए तरह–तरह के ऋण देते हैं। जैसे घर खरीदने के लिए गृह ऋण, उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा ऋण, कार और मोटरसाइकल के लिए ऑटोमोबाइल ऋण और दूसरी जरूरतों के लिए व्यक्तिगत ऋण। बैंकों में लोग बचत खाते खोल के अपना पैसा जमा करते हैं। इसके अलावा लोग इंश्योरैंस या बीमा में भी निवेश करते हैं। शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड में पूंजी निवेश में करते हैं।

लोगों से इक्कट्ठा किया हुआ पैसा उद्योगों और देश के विकास में लगाया जाता है। वित्तीय संस्थान न सिर्फ निजी कम्पनियों को बल्कि राज्यों और केन्द्र सरकार को भी तरक्की के कामों के लिए पूंजी मुहैया कराते हैं।

भारत में बैंकों ने लंबे समय से बुनियादी ढांचा के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बैंकों ने बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण का बीड़ा उठाया है। अधिकांश बैंकों ने फंड प्रदाता से लेकर शुद्ध सलाहकार सेवाओं तक में अपनी भूमिका का पालन किया है। आज ज्यादातर बैंकों ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को परामर्श प्रदान करने के लिए एक अलग लाइन बनाने के लिए उद्योग और आर्थिक

विशेषज्ञों को काम पर रखा है। बैंक भी शुल्क के लिए तीसरे पक्ष के ऋणदाताओं से धन की व्यवस्था करने के लिए मध्यस्थता में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। परियोजनाओं के मूल्यांकन में एक बढ़ती विशेषज्ञता ने बैंकों को इस तरह की परियोजनाओं के लिए एक गारंटर में कदम रखने के लिए बहुत अधिक आत्मविश्वास दिया है। प्रत्यक्ष वित्तपोषण के लिए, बैंकों ने लंबे समय से हमारे देशों के नीति निर्माताओं के साथ मिलकर पहल करने के लिए पहल की है। बुनियादी ढांचा एक सस्ता और व्यवहार्य विकल्प का वित्तपोषण करता है। बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं को दीर्घकालिक वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए सत्तारूढ़ सरकार ने अंततः आईआईएफसीएल (इंडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लिमिटेड) की स्थापना की घोषणा की। वित्तीय अवसंरचना परियोजनाओं से उत्पन्न होने वाली परिसंपत्ति–देयता बेमेल को प्रभावी ढंग से संबोधित करने में बैंकों की मदद करने के लिए आईआईएफसीएल को सशक्त बनाना। इस योजना को आधिकारिक रूप से 'व्यवहार्य अवसंरचना परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए टेकआउट फाइनेंस स्कीम' नाम दिया गया था जो 16 अप्रैल, 2010 से लागू हुई। 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012) के अनुसार, अवसंरचना के लिए वित्तपोषण

की आवश्यकता 514 बिलियन अमरीकी डालर आंकी गई थी। बैंकों के रूप में, एनबीएफसी और एफआई ने बुनियादी ढांचे के पुनर्वित्त संस्थान फंडिंग ब्रिज के साथ हाथ मिलाया है। हमारे नीति निर्माता और निजी संस्थान देश में अधिक बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ बनाने के लिए बहुत लोकप्रिय पीपीपी मॉडल के तत्वावधान में एक साथ आए।

बुनियादी ढांचे में निवेश और विकास आमतौर पर लोगों की आजीविका में सुधार करके उन्हें उच्च गुणवत्ता और सुविधाजनक जीवन जीने में मदद करता है। यह एकीकृत क्षेत्रीय विकास को चलाने के लिए एक महत्वपूर्ण इंजन के रूप में भी काम करता है, साथ ही आर्थिक सुधार और सतत विकास को बढ़ावा देता है।

वित्तीय संस्थानों की प्रारंभिक भागीदारी बुनियादी ढांचा निवेश की दिशा में पहला कदम है। व्यापारिक वित्तीय संस्थान सीमा पार सेवाओं में साझेदार के रूप में अपने लाभों का उपयोग करके एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

बैंक व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य परियोजनाओं के वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित करता है जो महत्वपूर्ण विकासात्मक प्रभाव डालते हैं। विशेष रूप से डिजाइन किए गए विकास ऋण प्रदान करके बुनियादी ढांचा सेवाओं की डिलीवरी में शामिल सार्वजनिक संस्थानों और निजी क्षेत्र की दोनों कंपनियों की सहायता करते हैं।

ग्राहकों को स्थानीय और अपतटीय दोनों के लिए आवश्यक प्रतिस्पर्धी धन को आकर्षित करने के लिए अपनी परियोजनाओं की पैकेजिंग में उनकी सहायता करने के लिए ग्राहकों को सलाहकार सेवाएं प्रदान करते हैं। वित्तीय संस्थाएं एवम बैंकों परियोजना के प्रमोटरों को आरंभ करने, तैयार करने, संरचित करने के साथ–साथ उन परियोजनाओं के लिए वित्त की व्यवस्था करना है जो उच्च विकासात्मक प्रभाव रखते हैं और आर्थिक रूप से व्यवहार्य हैं।

बैंक उन परियोजनाओं में इक्विटी या अर्ध–इक्विटी निवेश करते है, जिन्हें शुरू करने और विकसित करने के लिए जोखिम पूंजी की आवश्यकता होती है। बैंक इन परियोजनाओं का नेतृत्व करने के साथ, इस तरह के मालिकाना निवेश अन्य विकास वित्त संस्थानों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने की अनुमति देते है।

बैंक विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए घरेलू और बाहरी दोनों तरह की फंडिंग के लिए फंड प्रबंधन सेवाएं प्रदान करता है। बाहरी लक्ष्यों में अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक वित्त और विकास वित्त संस्थान और द्विपक्षीय और बहुपक्षीय फंड शामिल हो सकते हैं।

सरकार के सामने विकास की चुनौती केवल वित्त की नहीं है, बल्कि वितरण क्षमताओं की भी है। देश भर में विशेष रूप से उप–राष्ट्रीय सरकार के स्तर पर क्षमता की कमी स्पष्ट है। हम वर्तमान में मंत्रालयों, विभागों और एजेंसियों की संस्थागत और वितरण क्षमताओं को मजबूत करने के लिए तकनीकी सहायता, क्षमता निर्माण, सलाह और अन्य मूल्य वर्धित सेवाएं प्रदान करने वाले सहायता कार्यक्रमों को बढ़ावा देते हैं, व्यवस्थित करते हैं और धन देते हैं, साथ ही साथ उप–राष्ट्रीय सरकारों को विकास के प्रभाव को अधिकतम करते हैं ।

अंचल कार्यालय दिल्ली–।

मनीष कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020

भारतीय शिक्षा की विकास यात्रा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति,1968– स्वतंत्र भारत में शिक्षा पर यह पहली नीति कोठारी आयोग (1964–1966) की सिफारिशों पर आधारित थी। इस नीति के तहत 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य और शिक्षकों का बेहतर प्रशिक्षण और योग्यता पर फोकस था। साथ ही शिक्षा पर केन्द्रीय बजट का 6 प्रतिशत व्यय करने का लक्ष्य रखा गया था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986– इस नीति का उद्देश्य असमानताओं को दूर करने विशेष रूप से भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जाति समुदायों के लिये शैक्षिक अवसर की बराबरी करने पर विशेष जोर देना था। हालाँकि इसमें 1992 में थोड़ा संशोधन भी हुआ था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020– वर्तमान नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है, जो भारत सरकार के शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के निर्देशन में 34 वर्षों बाद तैयार की गई जिसे कैबिनेट द्वारा हरी झंडी दे दी गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षा की पहुँच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया है। नई शिक्षा नीति के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर देश की जीडीपी के 6% हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत ही 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' (Ministry of Human Resource Development & MHRD) का नाम बदल कर 'शिक्षा मंत्रालय' (Education Ministry) करने को भी मंजूरी दी गई है।

प्रमुख बिंदु

अगर सबसे पहले स्कूली शिक्षा की बात की जाए तो स्कूली शिक्षा के मूलभूत ढांचे में ही एक बड़ा परिवर्तन आया है। 10+2 पर आधारित हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली को 5+3+3+4 के रूप में बदला गया है। साथ ही संकाय (stream) को समाप्त कर बहु स्तरीय प्रवेश एवं निकासी (Muliple Entry and Exit) व्यवस्था को शामिल किया गया है।

(5+3+3+4)

इस नीति के पहले यानी जब 10+2 शिक्षा प्रणाली होता था तब स्कूल में दाखिला 6 वर्ष की उम्र में पहली कक्षा में होता था लेकिन नई शिक्षा नीति यानी 5+3+3+4 शिक्षा प्रणाली में स्कूल में दाखिला की उम्र घटाकर 3 वर्ष कर दिया गया है यानी कि अब बच्चे 3 वर्ष कि उम्र में ही स्कूल में दाखिला ले लेंगे लेकिन पहली कक्षा के बजाय नर्सरी में। इसे हम विस्तार से समझते हैं।

- पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज (Foundational Stage) – 3 साल का प्री–प्राइमरी स्कूल और कक्षा 1, 2 यानी कि इस स्टेज में बच्चे 3 वर्ष से 8 वर्ष तक पढ़ेंगे। इस स्टेज की सबसे

बड़ी खासियत यह है कि इस स्टेज में बच्चों को परीक्षा नहीं देनी होगी। कुल मिलाकर इस स्टेज में बच्चों का जो स्कूल के प्रति डर होता है उसे खत्म करना है और उसे खेल–खेल में स्कूल के प्रति लगाव पैदा करना है। इसके लिए शिक्षकों को भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

- तीन वर्ष का प्रीपेट्रेरी स्टेज (Prepatratory Stage)– इस स्टेज में बच्चे कक्षा 3 से 5 तक यानी कि 8 वर्ष से 11 वर्ष तक पढ़ेंगे। यहाँ बच्चे पढ़ाई के साथ–साथ अतिरिक्त गतिविधियों (extra Activities) जैसे कविता, पहेली, चुटकुले इत्यादि भी सीखेंगे जिससे उनका मानसिक विकास में मदद मिलेगी। समिति के अनुसार इस स्टेज में स्थानीय भाषा (regional language) में पढ़ाई होगी जिससे की बच्चों को अपनी ही भाषा में सीखने में आसानी होगी और वो नई–नई चीजों को जल्दी सीख व समझ पायेंगे। हालाँकि यह अनिवार्य नहीं होगा जो विद्यालय चाहेंगे वो अंग्रेजी माध्यम में भी पढ़ा सकते हैं। परीक्षाओं की शुरूआत इसी स्टेज में हो जाएगी।

- तीन वर्ष का मिडल स्टेज (Middle Stage)–इस स्टेज में बच्चे कक्षा 6 से 8 तक यानी कि 11 वर्ष से 14 वर्ष तक पढ़ेंगे। इस स्टेज में बच्चों को गणित, कला और विज्ञान के अलावा कंप्यूटर की शिक्षा तथा साथ ही कोई एक भारतीय भाषा (Indian Language) सिखने को मिलेगा साथ ही यहाँ बच्चे पढ़ाई के साथ–साथ व्यावसायिक और तकनीकी पाठयक्रम (vocational and technical courses) जैसे मत्स्य पालन, खाना बनाना, सिलाई–कढ़ाई, माली का काम, बढ़ई का काम, खेतीबाड़ी जैसे अनगिनत काम सीखेंगे, जिससे की बच्चों की दिलचस्पी को उचित दिशा देने में सहायता मिलेगी।

- चार वर्ष का सेकेंडरी स्टेज (Secondary Stage)–इस स्टेज में बच्चे कक्षा 9 से 12 तक यानी कि 14 वर्ष से 18 वर्ष तक पढ़ेंगे। इस स्टेज से पहले वाले स्टेज में साल में एक बार परीक्षा होगी जबकि इस स्टेज में साल में दो बार यानी 1 कक्षा में 2 सेमेस्टर होंगे। संकाय के समाप्त हो जाने से अब बच्चों को कई विषयों में से अपनी पसंद का विषय चुनने की आजादी होगी। उदाहरणार्थ यदि किसी बच्चे का गणित मजबूत है और उसकी दिलचस्पी इतिहास और अर्थशास्त्र में भी है तो वह गणित के साथ–साथ इतिहास और अर्थशास्त्र भी पढ़ सकता है। इससे पहले यह सुविधा नहीं थी। इस स्टेज में बच्चों को कोई एक विदेशी भाषा (Foreign Language) सिखने को मिलेगा। हालाँकि भारत और चीन के संबंधों को मद्देनजर रखते हुए चीनी भाषा को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

इसके अलावा स्नातक और स्नातकोत्तर के पाठयक्रम में भी कुछ बदलाव किए गए हैं जो कि इस प्रकार है–

- स्नातक– संकाय (stream) समाप्त हो जाने के बाद स्नातक (Graduation) को अब 4 वर्ष का कर दिया गया है। प्रत्येक वर्ष के समाप्ति पर उसे दी जाने वाली उपाधि इस प्रकार होंगी–

  1) प्रथम वर्ष– सर्टिफिकेट (certificate)
  2) द्वितीय वर्ष– डिप्लोमा (Diploma)
  3) तृतीय वर्ष– डिग्री (Degree)
  4) चतुर्थ वर्ष– रिसर्च (Research)

  इस पाठ्यक्रम की सबसे बड़ी खासियत यह है कि अगर कोई विद्यार्थी 1 साल या 2 साल पढ़ने के बाद यदि किसी कारणवश उसकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है और फिर कुछ समायोपरांत वह फिर से पढ़ाई करना चाहता है तो उसे शुरुआत से नहीं ब्लकि जहाँ छोड़ा था वहीं से जारी कर सकता है यह सुविधा पहले नहीं थी। चतुर्थ वर्ष यानी रिसर्च (Research) की जरूरत सिर्फ उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए होगी। नौकरी अथवा अन्य कार्यों के लिए तृतीय वर्ष यानी डिग्री मान्य होगा।

- स्नातकोत्तर (Post-Graduation)– स्नातकोत्तर की अवधि 1 या 2 साल का होगा यानी जो विद्यार्थी चतुर्थ वर्ष तक स्नातक (रिसर्च के साथ स्नातक) किया हुआ होगा उसके लिए 1 वर्ष और डिग्री स्नातक वालों के लिए 2 सालों का।

- नई शिक्षा नीति के तहत एम.फिल. (M.Phil) कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है यानी कि अब स्नातकोत्तर के बाद सीधे ही पीएचडी (Ph.D) कर पाएंगे जो कि 4 वर्ष का होगा। इसमें कोई विशेष बदलाव नहीं किया गया है।

- नई शिक्षा नीति के तहत विदेशी विश्वविद्यालयों को भी भारत में अपनी शाखा खोलने की अनुमती मिलेगी जिसके अनुसार दुनिया की शीर्ष 50 विश्वविद्यालय भारत में शाखा खोल पाएंगे हालाँकि यह प्रस्ताव हमारे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी

ने ही लाया था जिसका मौजूदा सरकर ने तब भरपूर विरोध किया था।

- नई शिक्षा नीति के तहत निजी स्कूल के फीस को भी नियंत्रित किया जाएगा।

भारतीय उच्च शिक्षा आयोग

नई शिक्षा नीति (NEP) में देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये एक एकल नियामक अर्थात भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (Higher Education Commision of India -HECI) की परिकल्पना की गई है जिसमें विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने हेतु कई कार्यक्षेत्र होंगे। भारतीय उच्च शिक्षा आयोग चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये एक एकल निकाय (Single Umbrella Body) के रूप में कार्य करेगा।

भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (HECI) के कार्यों के प्रभावी निष्पादन हेतु चार निकाय बनाये गये हैं जो कि इस प्रकार हैः–

1) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद (National Higher Education Regulatory Council - NHERC) : यह शिक्षक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये एक नियामक का कार्य करेगा।

2) सामान्य शिक्षा परिषद (General Education Council & GEC) : यह उच्च शिक्षा कार्यक्रमों के लिये अपेक्षित सीखने के परिणामों का ढाँचा तैयार करेगा अर्थात उनके मानक निर्धारण का कार्य करेगा।

3) राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (National Accreditation Council - NAC) : यह संस्थानों के प्रत्यायन का कार्य करेगा जो मुख्य रूप से बुनियादी मानदंडों, सार्वजनिक स्व–प्रकटीकरण, सुशासन और परिणामों पर आधारित होगा।

4) उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद (Higher Education Grants Council - HGFC) : यह निकाय कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के लिये वित्तपोषण का कार्य करेगा।

उम्मीद है नई शिक्षा नीति 2022–23 से पूरे देश में लागू हो जाएगा अगर इसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है तो यह नई प्रणाली भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी।

प्रधान कार्यालय, मानव संसाधन विकास विभाग

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही हिंदी गृह–पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया अपना फोटो तथा रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें। बैंक से सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य रचना भेजते समय उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा अपना पैन नं. (PAN No.) भी अवश्य भेजें।

मुख्य संपादक

विमोचन

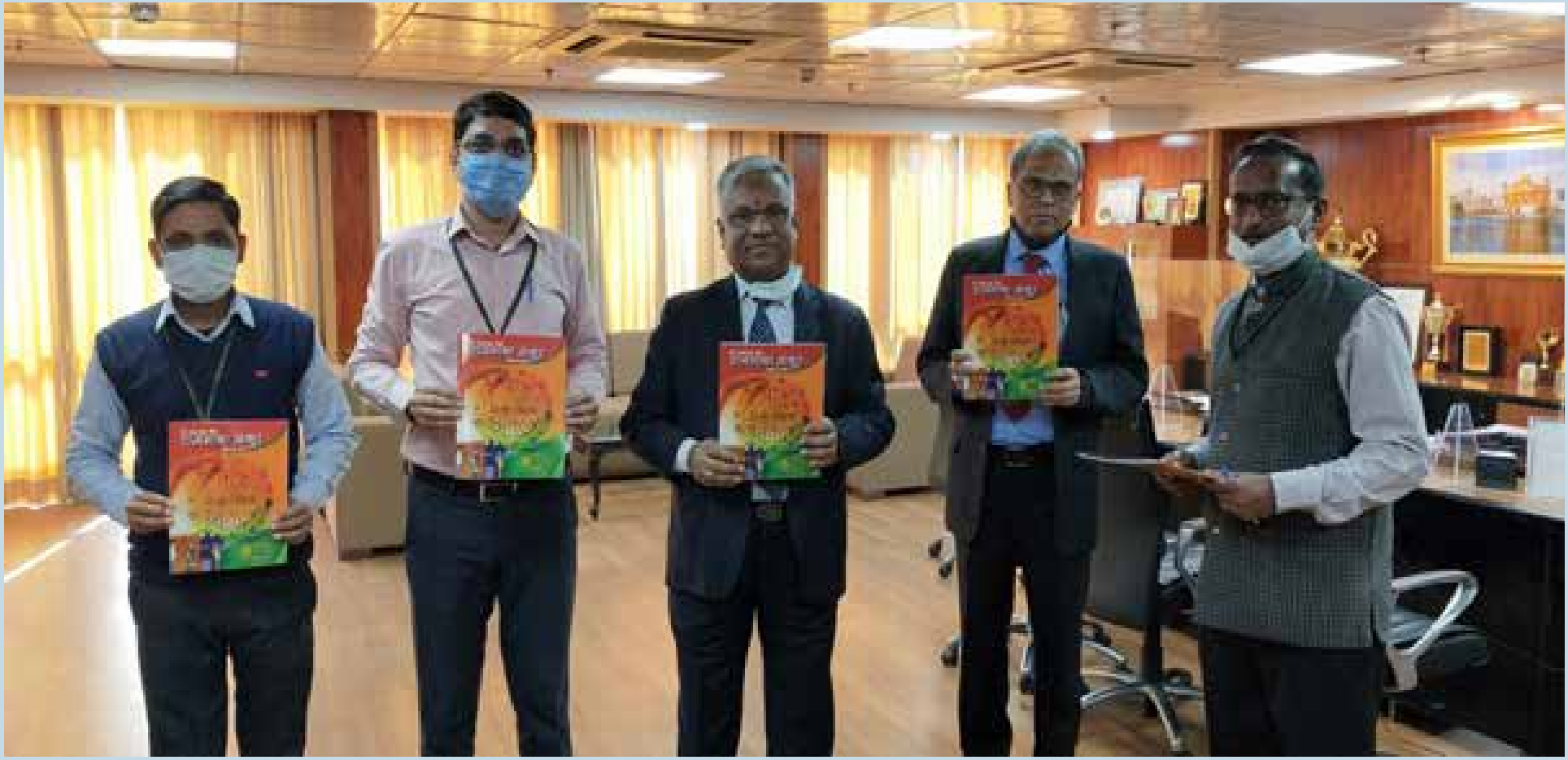

श्री एस. कृष्णन- प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अजित कुमार दास-कार्यकारी निदेशक, श्री अमित श्रीवास्तव-उप महाप्रबंधक तथा श्री निखिल शर्मा-वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री मोहन लाल - राजभाषा अधिकारी सितंबर, 2020 बैंक की तिमाही पत्रिका राजभाषा अंकुर का विमोचन करते हुए।

ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਮਿਟੀ ਧੁੰਧੁ ਜਗਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਆ।
ਜਿਉ ਕਰਿ ਸੂਰਜੁ ਨਿਕਲਿਆ ਤਾਰੇ ਛਪੇ ਅੰਧੇਰੁ ਪਲੋਆ।

कीरत करो । नाम जपो । वंड छको

श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

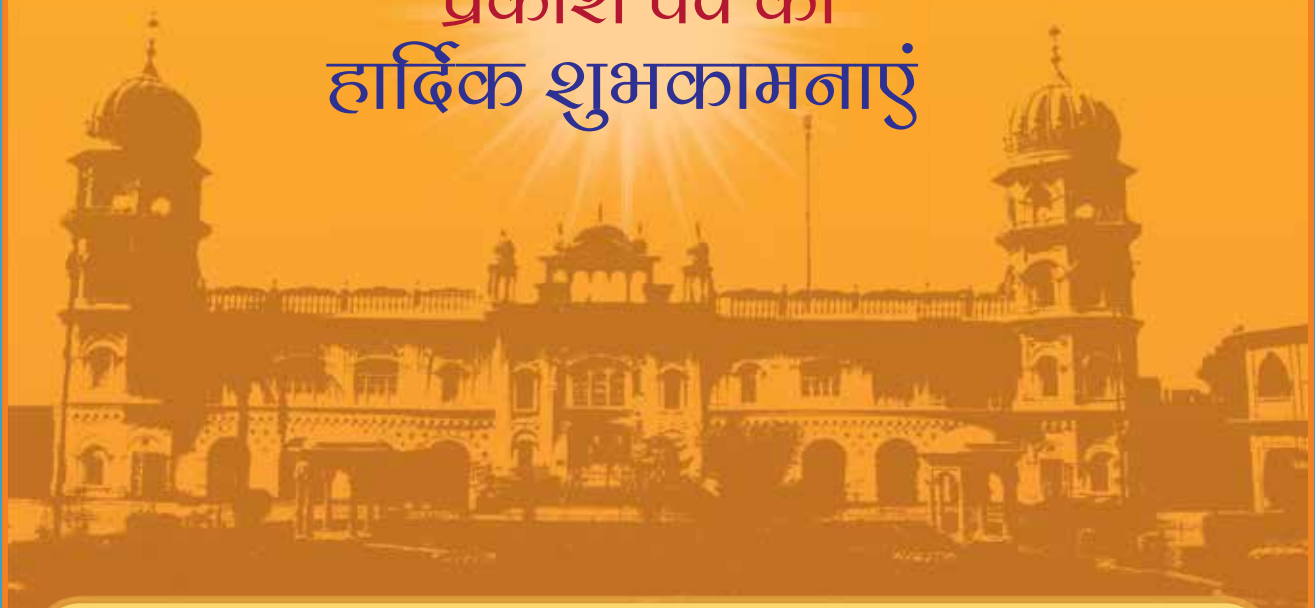

पीएसबी गोल्ड लोन
- ₹ 10 लाख तक आकर्षक ब्याज दर @ 7% तथा ₹ 10 लाख के ऊपर 7.50%
- राशि की अधिकतम सीमा ₹ 25 लाख
- सोने का आभूषण/गहनों के मूल्य का 75% तक फाइनेंस
- सोने के आभूषण/गहनों की प्रतिभूति पर उत्पादक और उपभोग के उद्देश्यों के लिए व्यक्तियों को ऋण

पीएसबी अपना घर
- घर/फ्लैट/प्लॉट के निमार्ण, खरीद और नवीनीकरण के लिए आवश्यकता अनुसार ऋण
- आकर्षक ब्याज दर
- शुन्य प्रोसेसिंग एवं निरीक्षण शुल्क*
- 30 वर्षों तक की अधिकतम पुनर्भुगतान अवधि
- परिवर्तन/परिवर्धन/मरम्मत के लिए वित्त विकल्प

पीएसबी व्यापार ऋण
- प्रोसेसिंग शुल्क में 50% की छूट
- ₹ 10 करोड़ तक फाइनेंस (टर्म लोन एवं ओवरड्राफ्ट)
- बेहद आसान ऋण स्वीकृति
- एमएसएमई यूनिटों के लिए विशेष छूट
- 10 वर्षों तक टर्म लोन की पुनर्भुगतान अवधि
- आकर्षक ब्याज दर

पीएसबी अपना वाहन
- आकर्षक ब्याज दर
- शून्य प्रोसेसिंग शुल्क
- 7 वर्षों तक की पुर्नभुगतान अवधि

*नियम एवं शर्तें लागू *ब्याज दर-रेपो रेट से जुड़ा

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है